सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - रंग

VIBRANT PUSHTI

“ जय श्री कृष्ण “

कितना मधुर सा दिन है
कितनी मधुर सी निशा है

मधुर दिन में मधुर गुंजन
मधुर निशा में मधुर आहट

श्याम आये श्याम रंग लिए
श्याम आये श्याम रंग रंग ने
श्याम आये श्याम रंग खेलने
श्याम आये श्याम रंग में डूबो ने

जैसे रंग की एक लहर
मैं दौड़ी नंद कुंवर ओर
अपने रंग से इतना रंग डारा
मैं श्याम रंग सी होरी

सररर सररर भरी पिचकारी
फररर फररर उड़ी रंग डारी
मैं भयी श्याम रंग की सांवरी
श्याम रंग सी श्याम दीवानी
श्याम सुहागिन होई
अरि! मैं श्याम सुहागिन होई

ऐसी रंग दी प्रिये ने
ऐसी रंग दी
श्याम चटक श्याम मटक
श्याम रपट लपट होई
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
श्याम मेरो प्रीत प्रियतम
मैं श्याम सांवरी बावरिया
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

हे कान्हा! तु कब आयेगा मेरे द्वार?

हे कान्हा! तु कब लिखेगा हथेली पर नाम?

रुमझुम झुमझुम पैजनिया बजी

किसीने पुकारा - गुदवाई लो अपना नाम

एक सखी ने हाथ पकड़कर बिठाया किशोरी सामने

कपोल पर लिखो - कान्हा

नासिका पर लिखो - नंदकिशोर

अधर पर लिखो - अच्युतानंद

हडपची पर लिखो - हरि

गले पर लिखो - गोपाल

गाल पर लिखो - गोविंद

कर्ण पर लिखो - कन्हैया

बाजु पर लिखो - बिहारी

हथेली पर लिखो - हरिहर

माथे पर लिखो - मोहन

रंग रंग से मुझे ऐसे रंग दो

हर रंग में घनश्याम

हर तरंग में श्याम

जब जब पलक उठे तब तब निरखुं सुंदर श्याम

जब जब पलक झुकें तब तब निहारु प्रेमी प्रियतम

श्याम श्याम श्याम

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अग्नि प्रचंड प्रज्वलित हो उन्हें होली कहते हैं 🙏

अग्नि दीपक ज्योत प्रज्वलित हो उन्हें दीपावली कहते हैं 🙏

प्रचंड ज्वाला अपनी आसपास के अनेक दुष्टों को मारे 🙏

टिमटिमाती दीपक ज्योत अपनी आंतरिक प्रकटाये 🙏

होली रंग रंगों से खेलें 🙏

दीपावली रंग कला से अभिभूते 🙏

होली नाच नचाते बरजोरे 🙏

दीपावली संग संग हंसते विजोरे 🙏

होली नटखट अदाओं से झुमे 🙏

दीपावली शांत रीतभातों से घुमे 🙏

होली प्रेम गालियों की बौछारों से गाये 🙏

दीपावली प्रेम आशीर्वाद की कृपा से राजे 🙏

होली की बधाई 🌷🙏🌷

रंगों की पूरवाई 🌷🙏🌷

भांग की पीलाई 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

रंग

अपना रंग

साथ का रंग

कुटुंब का रंग

समाज का रंग

समय का रंग

प्रकृति का रंग

सृष्टि का रंग

जगत का रंग

ब्रह्मांड का रंग

वात्सल्य का रंग

स्नेह का रंग

दोस्ती का रंग

प्रेम का रंग

वैविध्यता का रंग

कला का रंग

विद्या का रंग

संगीत का रंग

व्यवहार का रंग

स्वभाव का रंग

सेवा का रंग

कमाई का रंग

गर्व का रंग

अहंकार का रंग

अभिमान का रंग

कक्षा का रंग

कर्म का रंग

धर्म का रंग

भक्ति का रंग

परिवर्तन का रंग

आसमां का रंग

धरती का रंग

सूर्य का रंग

चंद्र का रंग

सागर का रंग

वातावरण का रंग

हवा का रंग

विविध रंगों से अपना एक रंग करना 🙏

आज हम कहीं रंगों में रहते हैं

आज हम कहीं रंगों से निपटते हैं

आज हम कहीं रंगों से सजते हैं

आज हम कहीं रंगों से जीते हैं

खुद ही समझ लो! मैं कौनसे रंग का हूं 🙏

रंगों में रंग ने और रंगा ने की शुभकामनाएं 🌷👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" धंधा किय दोस्ती "
कौन कहां कहां नहीं जुड़ते हैं!
जुड़ते जुड़ते धंधा किय दोस्ती हो जाती हैं 👍
यह धंधा किय दोस्ती में
शिस्त -
समझ
निखालसता
और
विश्वास के साथ समझ पूर्वक लिखा हुआ कबुलातनामा - समझोता करार हो
तो शायद सब हमारे दोस्त और सभी से हमारा अनोखा रिश्ता 👍
न कभी गफलत
न कभी असंमजस
न कभी बनावट
न कभी डर👍👍👍👍👍👍👍👍👍
हर कोई अपने मन, तन और कक्षा से अपना जीवन सुखमय जीता रहे।
चाहे वह पड़ोसी हो, विस्तार का हो, गांव का हो, देश का हो, परदेश का हो। 👍
नहीं कोई परेशानी
नहीं कोई हैरानी
नहीं कोई तकलीफ़
नहीं कोई मुसीबत🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏
सदा सम्मिलित काम
सदा सम्मानित कक्षा
सदा सम्मिलित निर्णय
सदा सम्मिलित लाभ
न किसी को अन्याय
न किसी के साथ दुर्व्यवहार
हर कोई अपना
हर कोई हमारा
तो चलो करें शुरुआत 👍
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" अहंकार - अभिमान " कैसे अपने में जागते हैं और रचाते और उठते हैं और उदभव होते हैं?

जीवन जीते जीते - समय चलते चलते जो जो हम अपने आपको शिक्षित और सिंचित करते रहते हैं। तब जो जीवन अनुभूति - विचार उदभवीति - क्रिया सम्मिलित और संपन्नित से जो हम पाते हैं - जो हम समझते हैं - जो समझाते हैं तब एक ऐसी धारा हममें स्पंदित होती हैं जो अहंकार - अभिमान को जन्म देती हैं। यह प्रक्रिया घड़ी घड़ी, क्षण क्षण और पल पल चलते चलते हम उनमें खूपते जाते हैं - डूबते जाते हैं।

बस! यही ही जन्म प्रक्रिया हमें अहंकारी और अभिमानी में परिवर्तित करती हैं और हम न तो नष्ट कर सकते हैं। जो जीवन पर्यन्त हममें यह जन्म धरते रहते हैं।

गहराई से समझना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं खड़ा नाथद्वारा द्वार
करुं दर्शन की गुहार
झलक दिखला दे पुष्टि शृंगार
नमन हो जाय बार बार

श्री प्रभु कहे!
हे भक्त वत्सल जीव!
मैं खड़ा अष्ट प्रहर
मेरी घड़ी घड़ी तुझे टहल
तु आजा कोई एक सवर

जीव कहे!
तेरी गली गली चहल
द्वार द्वार खड़े चौकीदार
मांगें दर्शन केरी मंजूरी
करें हम दोनों में दूरी

श्री प्रभु कहे!
हे दर्शन विरह जीव!
तुझे न लगाएं कोई जंजीर
तु दौड़ी आ मेरे तीर
मैं खड़ा हूं तेरी तस्वीर

जीव कहे!
ओहहह मेरे प्रियतम प्रेमी
निरखुं तेरी अलौकिक रीत
तुझे पाया नजर नजर तीत
स्वीकार नमन मेरे मन मीत
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारा देश

विभिन्नता भरा

उन्हें अभिन्न करने

एक ही उपाय है

हमारा विचार - कार्य ऐसे सिद्धांतों से घडना है - शिक्षित करना है - संस्कृत स्वीकारना है - सत्य अपनाना है जो हम शिस्तबद्ध - सत्य उपासक - विश्वसनीय - नैतिकता और नियमन पालक होना है 🙏

यह हम पा सकते है 🙏

हमारे सर्वोत्तम वेद - उपनिषद - वेदांत और श्री मद्भागवत - भाष्यों से है।

राजा - राजस्व - राज शासन से नहीं पर परिस्थिति नियमनों में घड़ी सैद्धांतिक मार्ग से होता हैं।

कहीं बार कथाएं सुनी पर कथा सिद्धांत को स्वीकार कर अपनाना हैं। हम राजा - राज्य - राजस्व और चरित्रों को ही स्वीकारना योग्य नहीं हैं।

हम कितने असंमजस में रहते हैं।

हम कितने अज्ञानता में रहते हैं।

हम कितने अंधश्रद्धा में जीते हैं।

हम कितने मान्यता से भरे हैं।

यह असमंजस, अज्ञान, अंधश्रद्धा और मान्यता की बेड़ी तोड़ेंगे तो ही हम अपना जीवन जन्म को समझ सकते हैं।

हम हमारे जीवन का सही उपयोग कर सकते हैं।

हम हमारे जीवन को समझ सकते हैं।

हम अपने आपको सुरक्षित कर सकते हैं।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

अवश्य सोचों 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम कैसे!

हमारी सगवडता भरा दिन उगाएं

हमारी चाहत भरी शाम जगाएं

हमारी भाती हूई बानगी पकवाएं

हमारी मनगमत कपड़े पहनाए

हमारी नजर चाहि दुनिया बनाएं

हमारी विचार मानी संसार रचाएं

हमारी मान्यता भरा जगत रचाएं

हमारी आज्ञा भरा समाज घडाएं

हम हम और हमारे

हमसे है जमाना न ज़माने से हम

चाहे कितनी सत्यता घटे तो भी यह सर न हो कलम

हम अपना स्वार्थ क्यूं छोड़ें!

नहीं हम ऐसे बेवकूफ जो हम अपना सब कुछ गंवाएं

पर न हम सत्य सिद्धांतों के लिए झुकें

यही ही है हमारी आन बान और शान

यही ही है हमारी पहचान 🌷🙏🌷

सोच लो 🙏

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न यह फूलों थे
न यह भंवर थे
न यह नदी थी
न यह सागर था
न यह रंग थे
न यह चमन था
तो भी मेरा तुमसे प्यार था
आज भी है
कल भी रहेगा

तु तितली हो
तो मैं फूल होगा
तु काजल हो
तो मैं नैन होगा
तु मोर हो
तो मैं मोरनी होगा
तु बादल हों
तो मैं बरसात होगा
तेरा मेरा प्यार का सिलसिला यूं ही चलता रहेगा
तु धरती हो
तो मैं आसमां होगा
तु झरना हो
तो मैं पर्वत होगा
तु नीलिमा हो
तो मैं लालिमा होगा
तेरा मेरा प्यार यूं ही खिलता रहेगा
तु गोप हो
तो मैं गोपी होगा
तु गंगा हो
तो मैं यमुना होगा
तु कान्हा हो
तो मैं राधा होगा
तेरा मेरा प्यार यूं ही थडकता रहेगा🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

તમે ગમે તેટલા લેખ લખો

તમે ગમે તેટલા પ્રવચન કરો

તમે ગમે તેટલા કીર્તન રચો

તમે ગમે તેટલા ભજન ગાઓ

તમે ગમે તેટલા રસિયા નાચો

તમે ગમે તેટલા સંગીત વગાડો

પણ

જ્યાં સુધી સેવા ના કરો તો શ્રી પ્રભુ તમારી સાથે આનંદ કેવી રીતે કરી શકે?

સેવા માં તમે શ્રી પ્રભુ ને સ્પર્શ નાં કરો તો તમને આનંદ કેમ પામો?

તમે શ્રી પ્રભુ ને તમારો આત્મીય આનંદ કેવી રીતે પમાડો?

શ્રી વલ્લભાચાર્યજી પણ આ તમામ પ્રવૃત્તિઓ કરતા કરતા પણ સેવા તો કરતા જ હતા.

તો આપણે પણ આ જ જીવન શૈલી કેમ ન અપનાવી શકીએ?

વિચારો અને અવશ્ય પોત પોતાનાં અનુભવો પુષ્ટિમાર્ગ ને નવચેતના પમાડશે 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

मैं मनुष्य दु:ख हर सकु

मैं मनुष्य कष्ट निवार सकु

मैं मनुष्य तकलीफ़ मिटा सकु

मैं मनुष्य मुसीबत मोड़ सकु

मैं मनुष्य रंज छोड़ सकु

मैं मनुष्य तंद्रा तोड़ सकु

मैं मनुष्य निद्रा रोक सकु

मैं मनुष्य अज्ञान हटा सकु

मैं मनुष्य अंधश्रद्धा निर्मूल सकु

मैं मनुष्य अंधकार लुप्त सकु

मैं मनुष्य मान्यता मोड़ सकु

मैं मनुष्य राग विराग सकु

मैं मनुष्य रोग रोक सकु

मैं मनुष्य असत्य मार सकु

हां! मैं मनुष्य हर व्यसनों मुक्त कर सकु

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जो स्वर समझ सके
वह अक्षर समझ सके

जो अक्षर समझ सके
वह विचार समझ सके

जो विचार समझ सके
वह क्रिया समझ सके

जो क्रिया समझ सके
वह ज्ञान समझ सके

जो ज्ञान समझ सके
वह विज्ञान समझ सके

जो विज्ञान समझ सके
वह सिद्धांत समझ सके

जो सिद्धांत समझ सके
वह शास्त्र समझ सके

जो शास्त्र समझ सके
वह धर्म समझ सके

जो धर्म समझ सके
वह संस्कार समझ सके

जो संस्कार समझ सके
वह संस्कृति समझ सके

जो संस्कृति समझ सके
वह प्रकृति समझ सके

जो प्रकृति समझ सके
वह सृष्टि समझ सके

जो सृष्टि समझ सके
वह ब्रह्मांड समझ सके

जो ब्रह्मांड समझ सके
वह अहं ब्रह्मास्मि समझ सके

जो अहं ब्रह्मास्मि समझ सके
वह स्व आत्मा समझ सके 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधा राधा राधा राधा "

हे मेरी आराध्या राधा

हे मेरी प्रिया राधा

" राधा राधा राधा राधा "

" राधा राधा राधा राधा "

हे मेरी नित्या राधा

हे मेरी दिव्या राधा

" राधा राधा राधा राधा "

" राधा राधा राधा राधा "

हे मेरी कृष्णा राधा

हे मेरी कान्हा राधा

" राधा राधा राधा राधा "

" राधा राधा राधा राधा "

हे मेरी प्रेमेश्वरी राधा

हे मेरी हृदयेश्वरी राधा

" राधा राधा राधा राधा "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तुम से प्यार हैं

तभी तो फूल खिलता हों

तुम से प्यार हैं

तभी तो तितली परवाना हैं

तुम से प्यार हैं

तभी तो नैना झुकते हैं

तुम से प्यार हैं

तभी तो अधर मधुरते हैं

तुम से प्यार हैं

तभी तो धड़कन धड़कती हैं

तुम से प्यार हैं

तभी तो दिल की रचना हैं

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

राधा यही हैं

कान्हा यही हैं

वल्लभ यही हैं

वृंदावन यही हैं

🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने विश्राम

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने विराम

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने प्रीतम

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने निकुंज

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने पंकज

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने मकरंद

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने आक्रंद

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने वंदन

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने मनन

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने स्पंदन

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने बंधन

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने रमण

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने वरण

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने शरण

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने चरण

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने प्रेमल

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने वत्सल

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने वादा

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने नाता

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने श्री राधा

यमुना का किनारा
पाया कन्हैया ने श्री सखा

यमुना का किनारा
निभाया कन्हैया ने अवतारा

हे यमुना! वाह कन्हैया!
रास रचैया! बंसी बजैया!

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" संकल्प "

यह कोई साधारण प्रक्रिया या विचार या क्रिया या वचन या श्रद्धा या विश्वास नहीं है 🙏 🌷 🙏

" संकल्प "

अति बलवान, विशुद्ध, वैज्ञानिक, सैद्धांतिक और विश्वास पूर्ण - जागृत - ज्ञान प्रमाणित सिद्धि हैं।

साधारणता से मानना - समझना और गौणता से धरना हमारी अंधश्रद्धा हैं, अंधविश्वास हैं, अधूरपता हैं, अज्ञान हैं, वचन भंग हैं, अमानसिकता हैं, अस्थिरता हैं, अवमूल्यन हैं।

" संकल्प "

अति दुर्लभ और उत्तम आत्मीय पहचान हैं। संकल्प करना अर्थात हमारा आत्मविश्वास और हमारी आंतरिक उर्जा का अस्तित्व हैं। जो संकल्प करता हैं वह व्यक्ति श्रेष्ठ और पूर्णता पूर्वक हैं। संकल्प से वह अपनी उर्जा को सूर्य की तरह विशाल तेज प्रकट कर सकता हैं। अपने आपको अखंड और विजयी सार्थक कर सकता हैं।

" संकल्प " का माहात्म्य अति निर्माण भरा और सर्जन भरा हैं। संकल्प से ही सिद्धि होती हैं।

बार बार " संकल्प " करना कोई तेजस्वी और पराक्रमी व्यक्ति ही होती हैं। उनका सामर्थ्य और वीरता का प्रमाण हैं।

" संकल्प " पूर्णता की प्राथमिकता हैं। जो कोई संकल्प करता रहे - करता रहे पर स्व सामर्थ्यता उनमें न हो वह व्यक्ति सामान्य हैं - साधारण हैं - अर्ध मूल्यवान हैं।

संकल्प करना ही निश्चिंतता की प्राथमिकता हैं। पराकाष्ठा पर पहुंचने की प्रथम कड़ी हैं।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

धर्म को औषधि न समझे

धर्म को निवारण मंत्र न समझे

धर्म को परिस्थिति का उपयोग न समझे

धर्म को तकलीफों का उपाय न समझे

धर्म को पाप का प्रायश्चित न समझे

धर्म को पुण्य का उदय न समझे

धर्म को समय का परिवर्तन न समझे

धर्म को सुख का साधन न समझे

धर्म को अंधश्रद्धा का व्यापार न समझे

धर्म को मान्यता का व्यवहार न समझे

धर्म को रोग प्रतिरोधक शक्ति न समझे

धर्म को जन्म जीवन का भाग्य न समझे

धर्म को नसीब न समझे

धर्म को बाधा या मानता न समझे

धर्म को परिस्थिति परिवर्तन न समझे

धर्म को दु:ख निराकरण न समझे

धर्म को श्री प्रभु प्राप्ति का साधन न समझे

धर्म को वरदान न समझे

धर्म को समाधान न समझे

धर्म को समयबद्ध न समझे

धर्म को अर्थोपार्जन साधन न समझे

धर्म को भेंट न समझे

धर्म को दान न समझे

धर्म को व्यवस्था न समझे

धर्म को अवस्था न समझे

धर्म को संस्था न समझे

धर्म को व्यथा दूर करने का यंत्र न समझे

धर्म को भोग न समझे

धर्म को इच्छा न समझे

धर्म को यात्रा न समझे

धर्म को परिक्रमा न समझे

धर्म को आस्था न समझे

धर्म को फल न समझे

धर्म को तकदीर न समझे

धर्म को उत्सव न समझे

धर्म को मनोरंजन न समझे

धर्म को मनोरथ न समझे

धर्म को सिद्धि न समझे

धर्म को नियति न समझे

धर्म को प्रतीति न समझे

धर्म को पुण्योदय न समझे

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

यह तो इतना गहरा सैद्धांतिक शिस्त नियमन हैं, जो मन, तन, धन और जीवन को आनंदमय बनाये🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक स्थली
एक मातापिता
एक पति पत्नी
एक भाई बहन
एक पुत्र पुत्री
साथ साथ रहते हैं 🌷🙏🌷
अर्थात
एक कुटुंब में साथ साथ अनेकों आत्माएं 🙏
यह आत्माएं एक दूजे से ऐसे बंधे हैं
ऋणानुत्मक बंधन
वात्सल्य बंधन
प्रेम बंधन
आध्यात्मिक बंधन
शायद कोई एक आत्मा ब्रह्मांड में विचरण करे
तो यह विचरण करता हुआ आत्मा कुटुंब के बाकी हर आत्माओं से बंधा ही रहता हैं जबतक सभी आत्माएं एक ही धारा से जुड़े हो।
यह धारा स्व आत्मीय बल - उर्जा और ज्ञान भाव से रचाई हो।
जैसे भक्त
जैसे विशुद्ध प्रेम
भक्त में - नरसिंह मेहता, मीराबाई
प्रेम में - राधा कृष्ण, गोप गोपी,
यह ऐसी धारा हैं जो धारा
आकाश गंगा स्वरुप हो
नदी स्वरुप हो
कुटुंब स्वरुप हो
यह धारा को स्व आत्मीय उर्जा ही एक रुप करती हैं और अखंड ज्योत होते होते विशाल तेजोमय रुप धारण करती रहती हैं।
जो तेजोमय रुप धर दिया तो वह पुनः जन्म से मुक्त होता जाता हैं।
ऐसा आत्मीय विकास विचरण ही जीव विज्ञान और आध्यात्मिक एकात्मकता हैं 🌷🙏🌷
जिसका संगठन आनंद स्वरुप से ही सिद्ध होता हैं। 🌷🙏🌷
एक अनुभूति से यह स्पर्श सिमाचिन्ह दिशा हैं।
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

સત્સંગ માં મળ્યો આપનો સાથ

અંગ અંગ પુલકિત થયું

કીર્તન માં સાંભળ્યો આપનો સાથ

મન તરંગ ખીલી ઊઠ્યાં

દર્શન માં પામ્યો આપનો સાથ

નયન ઉમંગ છલકી ગયાં

પરિક્રમા માં ઝાલ્યો આપનો સાથ

દંડવત પ્રણામ પ્હોંચી ગયાં

પુષ્ટિમાર્ગ નાં ઓ સંગાથી

આપથી વૈષ્ણવતા પામી

વારંવાર કરું આપને નમન

હે પુષ્ટિ જન સાથી 🙏

Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

गहरी बात है हमारे धामों की

किसीको बिना पैसे खाना खिला दें

तो इतनी कतारें लगेगी और सब कहेंगे प्रसाद हैं - भोजन दान हैं।

यही धाम में बिना पैसे चित्रजी या कोई पुस्तक दें

तो न कोई हाथ लगायेगा और दो हाथ जोड़ कर देखा अनदेखा कर देगा।

क्यूं?

१. पेट के लिए जीते हैं।

२. भोजन तृप्त करता हैं।

३. प्रसाद हैं तो श्री प्रभु का आशीर्वाद हैं।

४. भोजन ही सब दान में श्रेष्ठ दान हैं। - ऐसे समझते हैं बाकी सब दान इतने श्रेष्ठ नहीं हैं जितने अन्न दान हैं।

५. चित्रजी और पुस्तक को संभालना होता हैं - भोजन तो सीधा आरोगना ही हैं।

चित्रजी या पुस्तक से तृप्ता नहीं मिलती जो भोजन से मिलती हैं।

६. भोजन कोई भी करवा सकता हैं।

७. चित्रजी या पुस्तक लिखना - छपवाना या खरीद कर बांटना ही होता हैं।

८. भोजन किफायत और सरल हैं।

९. भोजन दान के लिए हर कोई साथ दे सकता हैं।

१०. ज्ञान समझना म

गहराई से सोचें तो इनमें सरल और सहज दान भोजन ही हैं।

चित्रजी या पुस्तक कोई सूचन, आज्ञा, शिक्षा वर्धक हो जो ऋची वर्धक न भी हो सके - जो भोजन सदा ऋची वर्धक ही होता हैं।

हम धाम में दर्शन और लीला प्रसाद के लिए हैं कोई ध्यान वर्धक पाना - समझने के लिए नहीं हैं।

नाम में प्रवचन, सत्संग आदि आयोजित करते हैं केवल अपने आप के लिए हैं।

सोचों 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम आपको देखते हैं 🙏

आप हमें देखते हैं 🙏

हम एक दूजे को देख देख में

प्रेम, सत्य, विश्वास और पवित्रता आ जाये तो! 🌷

हम आपको देखते हैं 🙏

आप हमें देखते हैं 🙏

हम एक दूजे को देख देख में

निडरता, योग्यता, धन्यता और शुद्धता

आ जाये तो! 🌷

हम आपको देखते हैं 🙏

आप हमें देखते हैं 🙏

हम एक दूजे को देख देख में

आधार, संस्कार, वफादार और निराकार

आ जाये तो! 🌷

हम आपको देखते हैं 🙏

आप हमें देखते हैं 🙏

हम एक दूजे को देख देख में

साथ, नाथ, पाथ और अर्थ

आ जाये तो! 🌷

हम और आप सुख - मुख - हसमुख और प्रमुख हो जाये 🙏

जन्म - जीवन धन्य धन्य और धन्य

आनंद - परमानंद - अखंड आनंद - सर्वानंद

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे यमुना! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा नमनीय हो गया 🙏

हे वल्लभ! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा सेवक हो गया 🙏

हे श्री नाथजी! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा भक्त हो गया 🙏

हे गोवर्धन! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा परिक्रमावासी हो गया 🙏

हे पुष्टि! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा अनुयायी हो गया 🙏

हे वैष्णव! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा आचरणी हो गया 🙏

हे अष्टसखा! तेरे स्मरण में तो मैं तेरा दास हो गया 🙏

स्मरण - सेवा - आचरण - दासत्व से मैं पुष्टि जीव हो गया 🙏

हे वल्लभ! मेरी एक ही विनंती 🙏

मुझे ऐसे जीवों से मिला दे जो जीवों से मैं तेरा सिद्धांत मय पुष्टिमार्ग का पथ दर्शक हो रहूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक जिज्ञासा प्रश्न है? 🙏

हम कोई यात्रा धाम जाते हैं या दर्शन करने कोई हवेली या मंदिर जाते हैं तो वहां श्री प्रभु से सनमुख होते हैं या सनमुख दर्शन करते हैं 🙏

यह सनमुख का ज्ञान भाव क्या हैं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तुने पहनी काली आंचल

साथ है पल्लू लाल

तुने अंजना आंखों में काजल

साथ है चिपकाया बिंदी लाल कपोल

तुने पहना कंगना हाथ में लाल

साथ इशारा प्रेम का अनमोल

यही है हमारी प्रीत निशानी

हे राधा! तु है मेरी अमोल आराधना

तु ही मेरी प्रीत सांवरिया

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

" सन्मुख "

सन् + मुख

सन् अर्थात सामने

सन् अर्थात समक्ष

सन् अर्थात समक्ष, उत्तम और श्रेष्ठ प्रतीति है - प्रत्यक्षता है 🙏

किसीके सन्मुख होना अर्थात स्व ज्ञान और भाव से हमारी प्रत्यक्षता है - उपस्थिति है।

जब ज्ञान और भाव की समझ की प्रत्यक्षी और उपस्थिति ऐसा परिष्कृत करती है कि हम जिसके समक्ष और प्रत्यक्ष उपस्थित हो रहे है उन्हें सत्यार्थ पहचानते है समझते है और अपने आपको भी सत्यार्थ पहचानते है समझते है तब ही हम समक्ष हो रहे है 🙏

सन्मुख दर्शन असाधारण है 🙏

सन्मुख दर्शन वही ही कर सकते है जो

१. अपने आपको शरणागत करे 🙏

२. अपने आपको समर्पण करे 🙏

३. अपने आपकी कक्षाको पहचान कर स्व समकक्षित होनेका वचनबद्ध होकर यथार्थ कार्यशील हो 🙏

हम मनमुख कक्षित जीव है, मनमुख जीव सदा ही संसार ग्रस्त है जो देह के साथ जुड़ा रहता है जिसका परिवर्तन सत्य से समकक्षित और प्रत्यक्षी करना है तब ही हम श्री प्रभु के सन्मुख हो सकते है 🙏

आजकल जो सन्मुख दर्शन के लिए व्यापार होता है - यह पद्धति केवल व्यापार वृत्ति है जिसमें न तो सन्मुख दर्शन होता है - संकल्प होता है - वचनबद्ध होते है - न संस्कार होते है - न शरणागत होते है 🙏

हम अज्ञान से भरे और एक प्रत्यक्षता के दिखावा करके अपने आपको मुर्ख ठहराते है 🙏 श्री प्रभु न तो कोई नजर मिलाते है - न तो द्रष्टि पात करते हैं 🙏

वृंदावन विहारी आचार्य श्री राजेन्द्र जी ने योग्यता पर अपना प्रकाश प्रस्तुत किया है -

सन्मुख हम जब भी मन्दिर जाऐं और अपने इष्टकी प्रतिमाके सन्मुख खडे हों या सामने उपस्थित हो तो इसका तात्पर्य है कि *हे मेरे प्रभु जी, मेरे प्राण आराध्य मैं आपके समक्ष स्वयंको समर्पित करने आया हूँ। मुझमें मेरा "मैं पना" है ही नहीं। मैं तो सर्वतोभावेन शरणागत हूँ। आप ही मेरी संभार करने वाले हैं।*इस विषय पर संत शिरोमणी तुलसीदास जी ने रामचरितमानसमें लिखा है:-

सन्मुख होई जीव मोहे जब ही

जन्मकोटि अघ नासहि तब ही।

धन्यवाद 🌷🙏🌷 आपका अभिवादन करता हूं 🙏

आपको प्रणाम करता हूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वैष्णव "

नरसिंह मेहता का पद

" वैष्णव जन तो तेने कहिए

जे पीड पराई जाणे रे "

गहराई से अपने आपको और साथ साथ पूरे संसार को समझे कि

कोई है वैष्णव?

क्यूं? नहीं हैं?

अष्टसखा पढ़ते हैं - जीते नहीं है 🙏

एक एक सखा का चरित्र ऐसे सिद्धांत हैं जो पूरब पश्चिम - उत्तर दक्षिण क्या! कोई दिशा के जो भी जीवन चरित्र हैं जो हम सर्वोत्तम या सर्वोच्च माने उनके हर लक्षण - गुण - संस्कार और धर्म निभाना हमारे एक एक सखा में हैं 🌷🙏🌷

पर हमें मान्यता से - अंधश्रद्धा से - अहंकार से और स्व सिंचन बिना केवल अर्थोपार्जन का साधन बना कर समझाते हैं - शिक्षित करते हैं - धर्म परायण करते हैं 🌷🙏🌷

जो पूरा अज्ञान भरा - हरीफाई भरा - असमानता भरा और असंमजस भरा ही सिंचते हैं 🙏

जो कहीं स्वार्थ भरे पाखंड और आडंबर करके परिस्थितिका फायदा उठाकर बस कहते रहते हैं

और अपना अंधा समाज ऐसे अज्ञानीओं के पीछे घुमते रहते हैं 🙏

तभी तो यह समाज सृष्टि कलयुग कलयुग करके अपने आपको मूर्ख घटते रहते हैं, अपना निजी स्वार्थ पोषते रहते हैं 🙏

अष्ट सखा तो ऐसे चरित्रों हैं जो सबको केवल श्री कृष्णमय होना हैं 🙏

क्रमशः 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अवश्य समझना 🌷🙏🌷

" राम "

ओहहह! हर एक के मन में " राम "
ओहहह! हर एक के जीवन में " राम "

ओहहह! हर एक के नैनों में " राम "
ओहहह! हर एक के अधर पर " राम "

आनंद आनंद और आनंद भयो
राम राम से मन जीवन नैन राम
न कोई बंधन न कोई द्‌वेष न कोई द्‌वैत
हर एक के राम हर एक के राम
हर कोई समान हर कोई हमारा
न कोई जाती न कोई पर जाती
हर कोई राम हर कोई के राम
न कोई भेद न कोई अवैध
हमरे राम सबके राम सर्व के राम
नहीं रही कोई जात पात
नहीं रही कोई आत बात
सब एक हर कोई एक
राम राम के जीव ही एक
यह घड़ी से मनाये राम
हर हर में देखे राम
जन जन के साथ राम
सेवा सेवक के राम
बांधें संकल्प एक राम
राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सत्य का एक प्रकार हैं

" विश्वसनीय सत्य "

ऐसा इसलिए कह रहा हूं कि - यह बात मान्यता सत्य - वैचारिक सत्य से उत्तम और सत्य हैं 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति - शास्त्र और सनातनता वैज्ञानिक सिद्धांत आधारित हैं 🌷🙏🌷

समय, मान्यता, अधूरपता, अंधश्रद्धा और अज्ञानता ने हमें यह वैज्ञानिकता से दूर कर दिया - तोड़ दिया - नष्ट कर दिया 🌷🙏🌷

हम हमारे अध्यात्म जीवन से, संस्कृति शास्त्र से, संस्कार अधिनियमों से और प्रखर अनुभवी आत्म विश्वास से संपूर्णता से सिद्ध कर सकते हैं - यह संस्कृति, शास्त्र और संस्कार सिंचन वैज्ञानिक सिद्धांतों से ही प्रमाणित हैं 🌷🙏🌷

हम कहींओ की बातें, विचारों, अपूर्ण निति नियमों को समझ समझ कर अपने आपको वैज्ञानिक सत्य से विमुख करते करते जीवन असंमजस, मान्यता के दौर से हम सत्य से अधिक दूर हैं और दूर होते जाने से हम विचलित हो कर हम मान्यता और अंधविश्वास में लिपटाते जाते हैं 🌷🙏🌷

" क्रमशः "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नंद महोत्सव "

हे जिज्ञासु मन!

" हमारे मन कृष्ण कब पधारते हैं? "

" कृष्ण " ऐसे कैसे हैं जो हमारे यहां पधारते हैं?

" हमारे मन को ऐसा क्या हुआ कि वह जिज्ञासा करने लगा कि " श्री कृष्ण " हमारे मन पधारे? "

" श्री कृष्ण " को पधारना अर्थात " श्री कृष्ण " को हमारा स्मरण होना - " श्री कृष्ण " को हमारा स्मरण कैसे आये? "

भाव करने से - तो मन में ' श्री कृष्ण पधारते हैं ' पर ज्ञान और आनंद से पधारे - सिद्धांत और नित्य से पधारे तो मन की जिज्ञासा को समर्थन मिले। 🌷🙏🌷

हे अभिव्यक्त पुरुषार्थ जन! मेरी आपको प्रार्थना है 🙏

आप हमें अपनी स्पर्श पद्धति से हमें कृतार्थ करे 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

દયા - દાન - ઉપકાર - સેવા - મદદ - સાથ એટલે પોતે પોતાની જાતે જ લૂંટાયા - ડૂબ્યા - મૂર્ખ બન્યા - છેતરાયા 🌷🙏🌷

કેટલી ઊંચી વિશ્વાસી પ્રતિક્રિયા 🌷🙏🌷

આજની આ ઉત્તમતા ને સદા જાગૃત રાખો - કરો

એજ દયા છે

એજ દાન છે

એજ ઉપકાર છે

એજ સેવા છે

એજ સાથ છે

" જય રામ જી " 🌷🙏🌷

Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

आसमां हमारा प्यार जताये

धरती हमारी उल्फत लुटाये

सागर हमारा प्यार बरसाये

नदी हमारी प्रीत बहाये

जन्मों जन्म से यह सिलसिला यूं ही चलता जाये

आज तुम कहीं हो आज मैं कहीं हूं

पर

यह प्यार सदा होगा रहेगा

सूरज बार बार डूबे

चंद्र बार बार खिले

हमारा सवेरा हर रोज होगा

हमारी सांझ हर रोज होगी

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

इसलिए तुम सदा " राधा " हो

चाहे कहीं रुप धरे कान्हा आये

तेरा श्याम तो तुझमें ही बसा है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे प्रिये!

तुममें क्या नहीं है?

तेरी जुल्फों मेरे प्यार की छाया है

तेरे नैना मेरे प्यार की द्रष्टि है

तेरे अधर मेरे प्यार के फूल है

तेरे कर्ण मेरे प्यार की कुंजियां है

तेरे बाजूएं मेरे प्यार के झूले है

तेरे अंगना मेरे प्यार की झील है

तेरे चरण मेरे प्यार की पूजा है

तेरे शृंगार मेरे प्यार की उर्मि है

हे प्रियतम! तु कहे

तु क्या क्या मेरे प्यार के लिए 🌷

राधा है

राधे है

श्यामा है

सांवरी है

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌷 🙏 🌷

यह कैसी असर है

यह कैसी डगर है

एक सांस मिली

बस आग ही आग है

यूं ही सुलगते सुलगते

यह नैना तरसे

यह मनवा तड़पे

यह तन थरथरे

यह आत्मा जले

न दिल थामे न थामे

न धड़कन धडक धड़के

बस

एक ही ख्याल एक ही याद

राधा राधा राधा राधा राधा

Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌷🙏🌷

एक विद्यार्थी ने एक प्रश्न पूछा

हम हिन्दुस्तानी को सुखी और धनाढ्य जीवन जीने के लिए

१. भगवान की भक्ति करके उनकी कृपा पानी🙏

२. हर व्यवहार में श्री प्रभु को साक्षी रखना

३. हर बार हम पर विश्वास रखे हम कभी दूसरे की तरह गलत नहीं करते

४. हम हमारी मेहनत से ही जीते हैं - न किसीकी दया या मोहताज नहीं हैं

५. हमारा हर कार्य शुद्ध, पवित्र और विश्वसनीय ही होता हैं

६. हम हररोज सेवा प्रार्थना दर्शन करते हैं

७. हम सदा समाज से सत्संग से ही जुड़े रहते हैं

८. न कभी झूठ बोलना, असत्य कार्य करना, किसीके साथ बदसलूकी करना हमारा जीवन नहीं हैं

९. हम सदा सबका भला और अच्छा ही इच्छते हैं

१०. हम धर्म पालन में कुशल और निष्ठावान हैं

११. न आडंबर न ऊंच-नीच न भेदभाव न कपट न दुष्टता न द्वेष करते हैं

१२. सदा सदाचार - संस्कारी जीवन जीना

ओहहह! 🙏

कितने महान और संस्कारित उच्च कक्षित व्यक्तित्व है यह हर हिन्दुस्तानीओ का - गर्व है ऐसे जीनेवालों पर जो सारी दुनिया में सभ्यता भरें और संस्कृत जीवन जीने वाले हैं

🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏

वाह! 🌷🙏🌷

चलो सोचते हैं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्यार कि कितनी अदभुत असर है

जो बहती धारा के दो किनारे

तु एक ओर

मैं एक ओर

तु दूर से निहारे

मैं दूर से निहारुं

तुझे मेरी असर

मुझे तेरी असर

बीच धारा ऐसी बहे

न तुम मुझसे मिले

मैं न तुमसे मिलु

चाहे एक ओर तु

चाहे एक ओर मैं

तु दूर दूर से पुकारे

मैं दूर दूर से पुकारे

कैसा है हमरा प्यार?

Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌷🙏🌷

है रिश्ता कुछ ऐसा हमारा

दूर दूर हो तो याद किनारा

पास पास हो तो मन उजियारा

तेरे नैन से जो जागे इशारा

मेरे नैन में उठे प्रेम रस धारा

अधर अधर छूए अंग सांवरा

मैं हो जाऊं श्याम बिहारा

तेरे चरणण अटकी आश

तेरे दर्शन से हो पूरी प्यास

टगर टगर अपलक निहारुं

मैं हो जाऊं श्यामा प्यारा

हे मन मोहना! श्याम सलोना

तु ही गिरिधर तु ही मुरारी

तु ही गोविंद तु ही बंसीधारी

तु ही गोपाल तु ही प्रीत पूजारी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी याद का दीवाना

तेरी सुगंध का दीवाना

तेरी नजर का दीवाना

तेरी गूंज का दीवाना

तेरी अदा का दीवाना

तेरी दूरी का दीवाना

तेरी निकट का दीवाना

तेरी आंतरिक का दीवाना

तेरी बाह्य का दीवाना

तेरी रज का दीवाना

तेरी .... दीवाना दीवाना

हे प्यार मैं केवल प्यार का दीवाना

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

हे यमुना!

हे श्यामा!

हे स्वामिनी!

हे राधा!

हे प्रीत!

न्योछावर 🙏 न्योछावर 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

किसे समझे!
कैसे समझें!
कहीं अर्थ
कहीं निष्कर्ष
कहीं अनुभव
कहीं परिस्थिति
कहीं रीति
कहीं निति
कहीं श्रुति
कहीं वृत्ति
कहीं सृष्टि
कहीं द्रष्टि
कहीं रुप
कहीं तर्क
कहीं वितर्क
कहीं स्वीकार
कहीं स्वतंत्र
कहीं पहचान
हां! हे पालनहारा! कैसे कैसे भूप - धूप और छूप
बस! जीते चलो जीते जाओ
हर कोई योग्य - हर कोई प्रयोग - हर कोई योग
हे प्रभु! मैं ही तु - तु ही मैं
तुझसे मैं मुझसे तु
तो भी ....
हम सबके साथ जीते हैं - सबको प्रणाम 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्याम आओ इन नैनों में

श्याम याद रहो इन मन में

श्याम गूंज रहो इन अधर पर

श्याम झूम उठो इन अंग पर

श्याम रंग बरसों इन आंचल पर

श्याम मधुर मुस्काओ इन अदा पर

श्याम आ तरसो इन विरह पर

श्याम आ धडको इन धड़कन पर

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌷🙏🌷

" Demonstration - Description - Definition "

" प्रदर्शन - वर्णन - व्याख्या "

जीवन कि यह ऐसी स्वयतता जो जीवन का मूल आधार हैं।

हर द्रष्टि - हर विचार - हर उच्चारण और हर क्रिया से पृथक पृथक देखते जाये - सोचते जाये - कहते जाये और करते जाये।

अवश्य हम अपने आपको समझते समझते हमारी योग्यता को सिंचते सिंचते जो पायेंगे वह सत्य ही होगा - इसमें अहंकार - आडंबर और अंधश्रद्धा का निर्मूलन ऐसा होगा की हममें आत्म विश्वास - आध्यात्मिकता और विशिष्ट योग्यता का संपादन होगा। 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तुम १८ बरस की
तुम्हारी मासूमियत
तुम्हारा अल्लडपन
तुम्हारी जुल्फों का बिखरना
तुम्हारे हंसते गालों के खंजन
तुम्हारे नैनों को बार स्थिर होना
तुम्हारे होठों का मचलना
और
तुम्हारा मुस्कुराना
ओहहह! मैं रुक जाता
मेरी नैना थम जाती
मेरे अधर बंध हो जाते
मेरी सांस थरथराती
मेरा मुखड़ा सहम जाता
मेरा मन ठहर जाता
बस! आसमां चुप
जमी चुप
हवा चुप
बस! एक हम
केवल हम
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
तुम अठारह बरस की
मैं १२ साल का
तुमने मुझे तुममें खींचा इतना
मैं हो गया प्रियतम भगवान
तु हो गई मेरी आह्यलादायनी
मैं हो गया तेरा शरण
सदा मैं बसु तेरे प्रीत चरण
तु कहे - तु ही मेरी रानी
राधा 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌷 🙏 🌷

हे राधा रानी! तु दूर न मेरे मन से दूर

मैं मथुरा! तेरे नैनों से दूर न तेरी यादों से दूर

जब भी दिल धड़कता है तु मेरे आस पास

जब भी हाथ पसारता है तु मेरा हाथ थाम थाम

जब भी मुरली अधर बिराजे तेरी धून तान तान

तेरे धड़कन में गूंजे तेरे निकट मधुरे शान शान

यही ही हमारी प्रेम लीला तु सदा साथ साथ

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌷 🙏 🌷

" શ્રી યમુનાજી સંપુટિ "

પુષ્ટિમાર્ગ ની આ સેવા જે કુટુંબીજનો, મિત્રો, સગાં સ્નેહીજનો અને સંબંધી જનો સાથે આયોજિત કરવું એ એક યજ્ઞ છે.

આ યજ્ઞમાં પધારેલા સર્વે વ્યક્તિજનો એ સ્વ સ્વર ઉચ્ચારણ થી આહુતિ આપવાની હોય છે 🌷🙏🌷

આ આહુતિ માં જે સંપુટ છે તે સંપુટ શ્રી સૂર્ય પુત્રી શ્રી યમુનાજી ને વિશુદ્ધ, પવિત્ર અને આનંદ થી સ્વ તન - મન - ધન અને આત્મીય પ્રેમ લુટાવીને ન્યોછાવર ગૂંજથી કરવો 🙏

આ ગૂંજથી શ્રી યમુનાજી નું પ્રાકટ્ય આપણાં હૃદયમાં અને સ્થળ ઉપર થાય છે 🌷🙏🌷

આ અનુભવ સ્વ ઉર્જા નાં સ્પંદનો આપણાં હૃદયમાં ઉર્મિઓ સાથે જાગે છે.

હે શ્યામ સુંદર શ્રી યમુના મહારાણી! આપ હમારી યાચના નો સ્વીકાર કરો અને સદા હમારા નયન - મન - તન અને જીવનમાં વાસ કરો 🌷🙏🌷

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

कितना सच हूं मैं

कितना सत्य है मुझमें

मेरा सच टटोलते टटोलते

मैंने पाया मेरा सत्य

सदा सोता सदा सोचता

न कभी जागता कहीं मुझे जगाते

न कभी सोचता कहीं मुझे अपना सोचाएं

घड़ी घड़ी कोई ढंढोलता

घड़ी घड़ी कोई टटोलता

घड़ी घड़ी कोई संवारता

घड़ी घड़ी कोई जगाता

सोया हुआ मेरा आचार

खोया हुआ मेरा आधार

" Vibrant Pushti *"

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वल्लभ "

श्री वल्लभ जो सत्य प्रेम और शिस्त का साक्षात्कार 🙏

श्री वल्लभ जो पुरुषार्थ यथार्थ और सार्थकता का आचरण 🙏

श्री वल्लभ जो पुष्टि सृष्टि और द्रष्टि के प्रवर्तक 🙏

श्री वल्लभ जो भक्ति वर्धक दुरितक्ष्यक और अज्ञानदूरस्तक के दर्शक 🙏

श्री वल्लभ जो मार्ग शिक्षक पथ निर्देशक और राह विशेषक के रक्षक 🙏

श्री वल्लभ जो श्री यमुना द्रष्टा श्री गिरिराज निष्ठा और श्री श्रीनाथजी पुष्टा के सूत्रक 🙏

हे वल्लभ! सदा हम पर कृपा करना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" श्री दामोदर हरसानीजी "

' दमला "

श्री वल्लभाचार्य केवल एक व्यक्ति के लिए एक संप्रदाय की रचना कर दी 🌷🙏🌷

गूढ़ रहस्य भरी बात है - कौन कैसे समझें? कैसे कोई उन्हें पहचाने?

केवल श्री वल्लभाचार्य के दो प्रसंग से - पुष्टिमार्ग प्रस्थापित नहीं होता हैं!

कौन है? श्री दामोदर हरसानीजी

Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌷🙏🌷

" श्री दामोदर हरसानीजी "

' दमला "

श्री वल्लभाचार्य केवल एक व्यक्ति के लिए एक संप्रदाय की रचना कर दी 🌷🙏🌷

गूढ़ रहस्य भरी बात है - कौन कैसे समझें? कैसे कोई उन्हें पहचाने?

केवल श्री वल्लभाचार्य के दो प्रसंग से - पुष्टिमार्ग प्रस्थापित नहीं होता हैं!

कौन है? श्री दामोदर हरसानीजी

हमें हमारे मन को - कोपी पेस्ट बनाएं रखा है जो किसीने कुछ कह दिया और हमने उसे स्वीकार कर लिया!

हमने भी पुष्टिमार्ग स्वीकार किया - अपनाया 🙏

तो हमारा मनन - चिंतन - अध्ययन तो अवश्य होना ही चाहिए 🙏

अखंड भूमंडलाचार्य श्री वल्लभाचार्य का हर एक विचार - क्रिया और आध्यात्मिकता वैज्ञानिक सिद्धांतों आधारित है 🙏

सूक्ष्मदर्शी - आंतरदर्शी - परादर्शी - आत्मदर्शी और सत्यदर्शी परम चैतन्य को हमें हमारी भक्ति यथार्थता सिद्ध करनी ही चाहिए तो ही पुष्टिमार्ग का अग्नि अखंड प्रज्ज्वलित होता रहे 🙏

हम भी पुष्टिमार्ग के सेवक है और प्रतिनिधि भी है तो हमारा यह सत्यार्थ पुरुषार्थ आवश्यक है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधा राधा राधा "

मन में स्वर जागे

रॉम रॉम में स्फूरे

स्पंदन स्पंदन में रंगे

तरंग तरंग में चंगे

वरण वरण में संगे

शरण शरण में अंगे

" राधा राधा राधा "

हे राधा! राधा! राधा!

Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌷🙏🌷

तु चाहे कितना भी इन्कार करे

पर तुझे पता है कि इकरार केवल तुमसे ही है

तु चाहे कितना भी रुठ ले

पर तुझे पता है कि मिलन केवल तुमसे ही है

तु चाहे कितनी भी नफ़रत करलें

पर तुझे पता है कि प्यार केवल तुझसे ही है

सूरत से तो बहोत अपने आपको बर्बाद कर देते है

हमने मोहब्बत तेरी रुह से की है

जहां केवल दिल ही खिलता है 🌷

इसलिए तो मीरा गिरधर की है

इसलिए तो श्यामा श्याम की है

इसलिए तो प्रिया प्रियतम की है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वल्लभ "

श्री वल्लभ हमारे आचार्य

श्री वल्लभ हमारे द्रष्टा

श्री वल्लभ हमारे आश्रय

श्री वल्लभ हमारे मार्गदर्शक

श्री वल्लभ हमारे निर्देशक

श्री वल्लभ हमारे संरक्षक

श्री वल्लभ हमारे पुरुषोत्तम

श्री वल्लभ हमारे सर्वोत्तम

श्री वल्लभ हमारे वैज्ञानिक

श्री वल्लभ हमारे धर्मात्मा

श्री वल्लभ हमारे विधाता

श्री वल्लभ हमारे मातापिता

श्री वल्लभ हमारे विशेषज्ञ

श्री वल्लभ हमारे प्रज्ञान

श्री वल्लभ हमारे सत्य

श्री वल्लभ हमारे प्राकट्य

श्री वल्लभ हमारे परमानंद

श्री वल्लभ हमारे संस्कृति

श्री वल्लभ हमारे ....

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री वल्लभ " 🌷🙏🌷

हे पुष्टि सृष्टि के प्रणेता आपको हमारा नमन 🙏 प्रणाम 🙏 दंडवत प्रणाम 🙏🌷🙏

आपका प्राकट्य - हमारा आनंद

आपका प्राकट्य - हमारा प्रेम

आपका प्राकट्य - हमारा ब्रह्म संबंध

आपका प्राकट्य - हमारा प्रज्ञान

आपका प्राकट्य - हमारी पुष्टि भक्ति

आपका प्राकट्य - हमारी सेवा

आपका प्राकट्य - हमारी द्रष्टि

आपका प्राकट्य - हमारा शरणागत

आपका प्राकट्य - हमारा चरणामृत

आपका प्राकट्य - हमारा आध्यात्म

आपका प्राकट्य - हमारा विश्वास

आपका प्राकट्य - हमारी विशुद्धता

आपका प्राकट्य - हमारा दूरितक्षयो

आपका प्राकट्य - हमारा दासत्व

आपका प्राकट्य - हमारा परमानंद

हे श्री वल्लभ! न भूलूं भटकूं क्षण क्षण

सदा साथ निभाऊं नयन - मन - तन - जीवन

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

સૂતક - વૈજ્ઞાનિક પ્રક્રિયા છે.

આપણાં ગોત્રમાં જે જે જીવ આવે તે જીવ સાથે આપણે એક થતાં હોઈએ છીએ.

આ કૌટુંબિક એકતાથી ઋણાનું બંધનથી આપણે એક ગૌત્રથી ગંઠાઈએ છીએ.

જ્યારે આ કૌટુંબિક એકતાથી કોઈ જીવ વિખૂટો પડે એટલે બાકીનાં સર્વે જીવોને દોષ અશુદ્ધિ લાગે એટલે અસ્પર્શતા લાગે. આ દોષ કે અશુદ્ધિ કે અસ્પર્શતા ને શુદ્ધ કરવા - સ્પર્શ કરવા દરેક જીવોએ સ્વ શુદ્ધિ - પવિત્રતા પામવા શ્રી પ્રભુ સ્મરણ, ચિંતન મનન થી સ્વ શુદ્ધિ થાય અને સદગત ને યોગ્ય અંજલિ આપી તેને આપણાં ગૌત્રથી મુક્ત કરી સદગતિ પ્રાપ્ત થાય.

વૈજ્ઞાનિક સિદ્ધાંત છે કે જોડાણ જોડાણ થી નિશ્ચિત પરિણામ મળે. હવે જોડાણ તુટે એટલે વિપરીતતા આવે આ વિપરીતતાને યોગ્ય કરવાનો સમય એટલે સૂતક.

આપણે શિક્ષણ પામ્યાં - આપણે વિચારક થયા - જ્ઞાતા થયા - યોગ્ય સમજતા થયા. સગવડિયા સૂતક - અંધશ્રદ્ધા ભરેલ વિચારો, માન્યતા પ્રમાણિત સંસાર નિયમો ને મનની સગવડિયા વૃત્તિ પ્રમાણે જીવીએ તે આપણાં સંસ્કાર છે?

આપણે કેટલાં ભ્રમિત અને ડરપોક છીએ કે મનની અજ્ઞાન માનસિકતા આગળ વામણાં બનીને અંધશ્રદ્ધા ભરેલ સમાજમાં સ્વ વર્ચસ્વ ધરાવી કાંઈપણ નક્કી કરી અજુગતા નિર્ણય કરી પોતાને, સમાજને, ધર્મ ને અને સ્વ ઈષ્ટ શ્રી પ્રભુ ને છેતરીએ છે.

જાતેજ વિચારો!

મારી પાસે સચોટ દ્રષ્ટાંતો છે - શુદ્ધ પવિત્ર સૈદ્ધાંતિક ચરિત્રો છે. જે આપણાં ને યોગ્ય દ્રષ્ટિ આપે છે.

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷
८४ वैष्णवों कि वार्ता - हर कोई ने पढ़ा - स्मरण में होगा - आचरण में होगा 🙏
श्री वल्लभाचार्य का यह व्याक्य - यह उच्चारण हर कोई ने पढ़ा है - सुना है और बार बार यह व्याक्य पर अनेकों विवेचन, टिका, सत्संग और चिंतन अध्ययन हुआ है। यह व्याक्य पुष्टिमार्ग का प्राथमिक और प्रथम व्याक्य है " दमला यह मार्ग तेरे लिए प्रक्ट कर रहा हूं " 🙏
गहराई से - योग्यता से - अध्ययन से और ज्ञान विज्ञान से हम उन्हें बार बार अपने आपसे या कोई ज्ञानी के साथ विचार-विमर्श करके एक तटस्थ सैद्धांतिक निर्णय पर लाये 🌷 🙏 🌷
मेरे विचार अवश्य यह व्याक्य पर पुष्टिमार्ग सिद्धांत अनुसार कहूंगा 🙏
मेरा आशय श्री वल्लभाचार्य की पुष्टिमार्ग योग्यता को सत्यतार्थ से स्पर्श करते करते पुष्टि चरित्र हो सकूं 🌷 🙏 🌷
" दमला यह मार्ग हमने तुम्हारे लिए प्रक्ट कियो "
हमारी संस्कृति के सर्वे आचार्य श्री ने यही नीति, रीति और वृत्ति मूल में प्रस्थापित - संस्थापित और शिक्षाद्वित जागृत विद्यादीप कि हैं।
श्री वल्लभाचार्यजी भी यही सिद्धांत आधारित जो ज्ञानी है, ध्यानी है, प्रज्ञानी और वैज्ञानिक है, वही स्वीकार किया है - अपनाया है और निभाया है। 🌷 🙏 🌷
श्री वल्लभाचार्य के तृतीय लोक गमन से श्री दामोदरदास हरसानीजी को पुष्टिमार्ग मूलत्व का सैद्धांतिक स्वरुप, अखंडता, संप्रभुता और वैज्ञानिक प्रज्ञानता की शिक्षा दे कर आज्ञाव्रत कहा - दमला! यह तुम्हें सार्थक करके पुष्टिमार्ग रहस्य प्रज्ज्वलित करके जगत के सारे जीवों को योग्यता प्रदान करनी है।
यही ही यथार्थता है श्री दामोदरदास हरसानीजी का चरित्र जीवन।
श्री गुंसाईजी अर्थात श्री विठ्ठल नाथजी यह रहस्य को अपने मूलत्व से जानते थे, समझते थे और पहचानते थे।
इसलिए वह श्री दामोदरदास हरसानीजी को श्री आचार्य स्वरुप श्री वल्लभाचार्य का रुप ही उनमें दर्शन करते थे। यही ही मूल आधार है - श्री वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग सिद्धांत का 🌷 🙏 🌷
यही परंपरा - यही समदृष्टि और सर्वोत्तम विद्यता श्री गोकुलनाथजी, श्री हरिराय जी और उनके समकालीन आचार्यों ने स्वीकारा था, अपनाया था 🌷 🙏 🌷
इसलिए तो श्री हरिराय जी को श्री महाप्रभु की उपाधि से विभूषित किया है 🌷 🙏 🌷
क्रमशः
न कोई संदेह या संशय या संकोच नही है - यह पुष्टिमार्ग की योग्यता का प्रमाण है 🌷 🙏 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

" कुल्या: पौराणिका: प्रोक्ता: पारंपर्ययुता भुवि "

श्री वल्लभाचार्य जी अपनी रचना " जलभेद: " में यही कहते हैं

कुल्या अर्थात सांप्रदायिक ज्ञानी - भक्तों - पंडितों - वैष्णवों - सखाओं जिन्होंने श्री सुबोधिनीजी, ग्रंथों, वार्ता आधारित जो सैद्धांतिक जीवन जीते हुए कोई भी प्रकार से शिक्षा दे, सूचन करें तो उसे अवश्य स्वीकार कर अपनाना चाहिए 🙏

" दमला यह मार्ग तेरे लिए प्रक्ट कियो है " यह मूल सूत्र ही सिद्ध करता है कि जो जीव ज्ञानी हो, योग्य हो, पुष्टिमार्ग सिद्धांत आधारित ही आज्ञाकारी जीवन हो तो उनका हर चरित्र स्वीकार ही होना है - अपनाना ही है 🌷🙏🌷

इसलिए तो " ८४ वैष्णवों वार्ता " पुष्टिमार्ग सिद्धांतों की मूल धरोहर है 🌷🙏🌷

इसमें केवल सैद्धांतिक ही जीवन मार्गदर्शन है 🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्य स्वयं श्री वैष्णव को ही पुष्टिमार्ग का मूलत्व स्वीकारते है 🌷🙏🌷

कुल प्राधान्य निरर्थक है 🌷🙏🌷

वैष्णव प्राधान्य ही योग्य और सर्वोत्तम है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"हे प्रभु! आप वही ही ठहरें!

मेरे परमत्व श्री आचार्य वल्लभ अभी निंद में है 🙏

आप थोड़ी देर वहां थाडे रहीओ🙏

मेरे श्री गुरुदेव को कोई विक्षेप न हो🙏

श्री प्रभु ने तुरंत ही स्वीकार किया 🙏

सोचें हम की कितनी योग्यता है श्री दामोदरदास हरसानीजी में कि अपने आपको जो क्रिया फल प्राप्त हो पर मेरे आचार्य को आराम ही हो। 🌷🙏🌷

यही ही है वैष्णवता की सार्थकता

यही ही है वैष्णवता की योग्यता

यही ही है वैष्णवता का मूल सिद्धांत

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्य जी मन, तन, धन और सांसारिक जीवन से उसी समय मुक्त हो गये थे जब माता इल्लमांगुरु और पिता लक्ष्मण भट्टजी ने उन्हें समी के वृक्ष समीप छोड दिया था। बाल्यावस्था में ही उन्होंने सर्वे शास्त्रों का अध्ययन करके अपने आपको अखंड संन्यासी में परिवर्तित कर दिया था।

न उन्हें संसार की कोई अपेक्षा थी न कोई तृष्णा थी। श्री पंढरपुर पंढरी श्री विठ्ठल नाथजी की आज्ञा से उन्होंने ने सप्तम लग्न वचनम् से जुड़े। न कोई कुल और वंश से मुक्ति की अपेक्षा थी। वह अच्छी तरह से पहचानते थे गृहस्थी की माया और बंधन, इसलिए वह अपने मन, तन, धन, वचन और आध्यात्मिक जीवन से संकल्पित थे।

क्षण क्षण अपने आपको ऐसा ही स्थितिप्रज्ञ करते थे कि उन्हें केवल जगत के जीवों को योग्यता प्रदान करनी है - पुष्ट करना है - शुद्धाद्वैत मार्ग प्रस्थापित करना है।

श्री वल्लभाचार्य जी का एक एक रचना का अभ्यास करें

हर रचनाएं वैज्ञानिक सिद्धांतों से जीव का कल्याण कैसे हो, जीव योग्य और सर्वोत्तम कैसे बने उसी पर ही उन्होंने अपना चारित्र्य प्रज्ज्वलित किया है।

हे परम श्रेष्ठ और श्रद्धेय आचार्य!

आपको सदा दंडवत प्रणाम 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्

मेरे कृष्ण मेरे गोपाल
मेरे गोविंद मेरे गौवाल
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्

मेरे गिरिधर मेरे श्याम
मेरे बंसीधर मेरे घनश्याम
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्

मेरे गोवर्धन मेरे गिरिराज
मेरे वल्लभ मेरे विठ्ठल
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्

मेरे बालाजी मेरे पंढरीनाथ
मेरे श्रीनाथ मेरे जगन्नाथ
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्

मेरे बद्रीनाथ मेरे रंगनाथ
मेरे पद्मनाभ मेरे द्वारकानाथ
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्

मेरे वेणुगोपाल मेरे मोहन
मेरे बांके बिहारी मेरे मदन
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् कृष्ण स्वागतम् कृष्ण
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जिज्ञासा प्रश्न है 🙏

गहराई से भरा - अति चिंतनीय यह जिज्ञासा है - जो इतनी आवश्यक है कि हर एक जीव को यह समझना ही हैं।

" कुल किसे कहते हैं?

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह प्रश्न से न तो कोई अपमान हैं

यह प्रश्न से न कोई अहवेलना हैं

यह प्रश्न से न कोई द्वेष है

यह प्रश्न का उत्तर हर कोई को समझना - स्व शिक्षित होना ही हैं।

मेरी विनंती हैं - अपने अपने अनुभव और संज्ञान से इसका अर्थ समझाते 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्य चरित्र को अति गहराई से समझता गया तो मैंने एक ऐसा रहस्य पाया कि 'कुल 'का अर्थ है - जो मूल गौत्र जैसा सैद्धांतिक जीवन अपने वंशज रुप, स्वरुप, कर्म, धर्म और चर्म, संसार, संस्कार और संस्कृति ज्ञापन कर अविरत विद्वत्ता पा कर जीव, जगत, प्राकृत - अप्राकृत, जल, थल, नभ और ब्रह्मांड को उज्जवल करके अपना निरपेक्ष पुरुषार्थ सिद्ध करते रहें।

इसे कुल वंशज कहते हैं।

हमारे हिन्दु संस्कृति में जो भी संप्रदाय हैं इनमें जो यही सैद्धांतिक पद्धति से आचार्य कुल परंपरा हैं जो सारे जीवों को और जगत को सदा उज्जवल करते हैं।

यही सत्य हैं - यही योग्य हैं - यही कुल का योग्य अर्थ हैं। 🙏

हम भी हमारे कुल ऐसे ही उजागर करते रहे, सिंचते रहे, विद्वत करते रहे - यही तो सही जीवन का पुरुषार्थ हैं।

बाकी तो त्रेता युग - द्वापर युग और कल युग में जीते रहे और मान्यता - अंधविश्वास - अंधश्रद्धा में डूबे रहे।

ब्रह्मांड, जगत, संसार वैज्ञानिक सिद्धांतों आधारित समय काल चक्र से परिवर्तित होता रहता हैं। यह परिवर्तन भी यही गुणधर्म और गौत्र से नियुक्त हैं - निर्माण हैं - प्रमाण हैं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह नजर - कैसे छुपाएं

यह अधर - कैसे रुकाएं

यह याद - कैसे भूलाएं

यह अक्षर - कैसे मिटाएं

यह स्वर - कैसे मोडाएं

यह स्पर्श - कैसे ठुकराएं

जहां जहां है साथ साथ है

सच - यह कैसी असर है 🌷🙏🌷

कान्हा! मैं क्या करूं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरे मेरे बीच न अब सागर न पर्वत

तेरे मेरे बीच न अब किनारा न जंगल

तेरे मेरे बीच न अब आंधी न तुफ़ान

तेरे मेरे बीच न अब संशय न संदेह

ऐसी प्यार कि डोर बंधी

जहां तेरी धड़कन वहीं मेरा दिल

जहां तेरे नैन वहीं मेरा स्मरण

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

मैं व्रज बाला तु गौएं का ग्वाला

कैसे तु गोपी को पहचानें

तु सारा जग का रखवाला

तेरा प्यार तेरा विरह तेरी लीला

बस यहीं मेरी प्रीत की ज्योत ज्वाला

जो अविरत जलें मेरे अंग अंग तलें

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

जब श्री श्रीनाथजी का प्राकट्य गोवर्धन कि निकुंज में हो रहे थे तब ही श्री वल्लभाचार्य जी ने संकेत पाया कि श्री श्रीनाथजी का प्राकट्य के लिए तुरंत उपस्थित हो। श्री वल्लभाचार्य जी अपनी यात्रा को वहीं छोड़कर तुरंत उपस्थित हुए और श्री श्रीनाथजी का प्राकट्य हुआ 🌷🙏🌷

यह संकेत पुष्टिमार्ग की स्थापत्य परिभाषा है 🌷🙏🌷

यह संकेत पुष्टिमार्ग की संस्थापना की प्राकट्य लीला है 🌷🙏🌷

यह संकेत पुष्टिमार्ग का सिद्धांत की प्रमाणिततता सिद्ध करता है 🌷🙏🌷

यह संकेत ब्रह्म संबंध कि निधि की प्राथमिक भूमिका है🌷🙏🌷

यह संकेत श्री वल्लभाचार्य जी के शुद्धाद्वैत का प्रमाणित प्रमेय सिद्धि की झांकी है 🌷🙏🌷

यह संकेत भूतल पर बिराजते पुष्टि जीवों की भक्ति का प्रमाण है 🌷🙏🌷

एक विनंती करता हूं 🙏

हमने अपने आपको प्रणाम - चमत्कार - साक्षात्कार को ही सत्य समझते हैं 🙏 सत्य की परिभाषा समझते हैं 🌷🙏🌷

भाव की उत्कृष्टता समझते हैं 🌷🙏🌷

पर

जब कोई जीव को ऐसी लीला का प्रार्दुभाव हो तो वह जीव पुष्टिजीव हैं 🌷🙏🌷

यह स्वीकार करना धर्म हैं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्रमशः

ઓ મારા વલ્લભ! ઓ મારા વિઠ્ઠલ!

ઓ ગોવર્ધન ગિરધારી!

પધારો મારે આંગણે 🙏 પધારો મારે આંગણે 🙏

જ્યાર થી બ્રહ્મ સંબંધ પામ્યો

ત્યાર થી નિત નિત ગુણ ગાઉં

વલ્લભ વલ્લભ મારું મનડું પોકારે

સદા આનંદ માં નાચે

ઓ મારા વલ્લભ! ઓ મારા વિઠ્ઠલ!

ઓ ગોવર્ધન ગિરધારી!

પધારો મારે આંગણે 🙏 પધારો મારે આંગણે 🙏

જ્યાર થી પુષ્ટિ સેવા સ્વીકારી

ત્યાર થી તન મન ધન શરણ ધરી

વિઠ્ઠલ વિઠ્ઠલ મારું જીવન સુધારે

સદા પુષ્ટિ રંગ માં રાચે

ઓ મારા વલ્લભ! ઓ મારા વિઠ્ઠલ!

ઓ ગોવર્ધન ગિરધારી!

પધારો મારે આંગણે 🙏 પધારો મારે આંગણે 🙏

વલ્લભ વલ્લભ! વિઠ્ઠલ વિઠ્ઠલ!

વલ્લભ વલ્લભ! વિઠ્ઠલ વિઠ્ઠલ!

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" માનસી ગોવર્ધન પરિક્રમા "

કેટલી અદભુત ભક્તિ સિંચનીય પુષ્ટિમાર્ગ ની પ્રેમ નિધિ 🌷🙏🌷

માનસી - પુષ્ટિમાર્ગ ની અમૂલ્ય પ્રેમ ધારા

આ સેવા પદ્ધતિ અનોખી અને નિરાલી છે 🌷🙏🌷

ઘડી ઘડી મન શ્રી પ્રભુ સ્મરણ માં લીન થાય અને ક્ષણે ક્ષણે શ્રી પ્રભુ નો સાક્ષાત્કાર થાય તે જીવન ને માનસી સેવા પામ્યાં 🙏

મન સ્થિતપ્રજ્ઞ - તન સ્થિતપ્રજ્ઞ - નયન સ્થિતપ્રજ્ઞ - જીવન સ્થિતપ્રજ્ઞ 🌷🙏🌷

જીવનની કોઈ પણ પરિસ્થિતિમાં સર્વથા સ્થિર એટલે સ્થિતપ્રજ્ઞ

કેવળ નિરપેક્ષ - કેવળ પ્રેમશેષ - કેવળ હ્રદયવિશેષ - કેવળ મનાદ્વૈત.

માનસી - અસાધારણ, અસામાન્ય અને અલૌકિક રંગ છે, સ્પર્શ છે, ઊર્મિ છે, ઉર્જા છે.

મન સાધન થી શ્રી પ્રભુ ને પામવા જે યજ્ઞ છે - જે તપસ્યા છે - જે પ્રજ્વલતા છે - જે અક્ષયતા પ્રદાન કરે છે 🌷🙏🌷

ગોવર્ધન ચરિત્ર - પુષ્ટિમાર્ગ ની આમૂલ શિક્ષા છે જે આત્મીય જીવ સંકલ્પ કરે અને સમયાનુસાર ગોવર્ધન ચરિત્ર નાં સ્પંદનો પામતા પામતા સ્વ ગોવર્ધન માં પરિવર્તિત થાય તે શિક્ષા એટલે ગોવર્ધન ચરિત્ર.

ક્રમશઃ 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

માનસી - પરિત્યાગ

માનસી - પ્રત્યાર્પણ

માનસી - પરમાર્થ

માનસી - આંતર પ્રાકટ્ય

માનસી - સર્વત્ર સમર્પણ

માનસી - શરણાગતિ

માનસી - દાસત્વ

ગોવર્ધન - ગોવર્ધન ચરિત્ર પ્રમાણિત કરે છે - જીવ અનેકો રુપ સ્વરૂપ માં પરિવર્તિત પામી પોતે કરેલા કર્મોની ગતિ થી ચલ - અચલ, નભ - થલ - તરલ, સ્થૂળ - સૂક્ષ્મ શરીર, આદિ અનેક પ્રકારના શરીરો જે બ્રહ્માંડ માં વિચરે છે - અનેક લોકમાં ગતિ પામે છે 🌷🙏🌷

ગોવર્ધન પણ ગોલોકધામ નાં આત્મ સ્વરૂપ હતા. અનેક જન્મોની અનેક તપસ્યા થી તેઓને આ પર્વત રુપ મળ્યું.

અર્થાત દરેક તત્વ રુપ અનેકો સંયોજનોથી રુપ સ્વરૂપ ધારણ કરે છે.

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

ક્રમશ:

ચિંતન ચિંતન ચિંતન થી કંઈક જાણ્યું ગોવર્ધન ને ઋષિ મુનિએ શાપ આપેલો કે તું દરરોજ રતિ ભાર ધરતી માં ગરકતો જઈશ - નષ્ટ થતો જઈશ 🙏

ચિંતન ચિંતન અને ચિંતન થી એક ઉષ્મા જાગી - પુષ્ટિમાર્ગ શ્રી વલ્લભાચાર્યજી ની ઉર્જા આવી માન્યતા સ્વીકાર કરે? ના - કદી નહીં 🙏

જ્યાં સત્યતા છે

જ્યાં સિદ્ધાંત છે

જ્યાં શુદ્ધાદ્વૈત છે

જ્યાં વિજ્ઞાન છે

ત્યાં આવી લોક વાયકા કે માન્યતા?

નહીં નહીં 🙏

બસ ત્યારે આત્મીય જ્યોતિ નાં ઊંડાણ માં થી એક ગૂંજ જાગી

" માનસી ગોવર્ધન પરિક્રમા "

🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

ક્રમશઃ

न जा न जा श्याम दूर मुझसे

यमुना यहां गोवर्धन यहां

तेरे सखा सखी यहां

कैसे रहेगा हम बिन

न जा न जा श्याम दूर मुझसे

सुननी है तेरी मधुर मुरलियां

खेलनी है माखन मिश्री चोरियां

कैसे रहेंगे तुम बिन

न जा न जा श्याम दूर मुझसे

नैनों की पलकों न झुकें

अधर के स्वर न गूंजें

कैसे जीयेंगे तुम बिन

न जा न जा श्याम दूर मुझसे

भोर का सूरज कैसे जागेगा

रात का चंद्र कैसे खिलेगा

कैसे सिंचेगी प्राण धारा

न जा न जा श्याम दूर मुझसे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" માનસી ગોવર્ધન પરિક્રમા "

શ્રી વલ્લભાચાર્યજી એ કહ્યું છે - ' દુર્લભો માનુષ્ય દેહ ' જે સદા શ્રેષ્ઠ અને સદા ઉત્તમ કરવો 🙏

ગોવર્ધન ચરિત્ર આ સૂત્રનું એક અનોખું દ્રષ્ટાંત છે 🌷 🙏 🌷

" માનસી ગોવર્ધન પરિક્રમા " કરવા આ રહસ્ય ને સમજવું અતિ આવશ્યક છે 🌷 🙏 🌷

કારણકે આપણે અત્યારે મનુષ્ય દેહ ધરી આ જગતમાં વિચરી રહ્યા છીએ. શ્રી વલ્લભાચાર્યજી સમજાવે છે કે - આ દેહ ધરવા બ્રહ્માંડનાં ઉત્તમ સિદ્ધિ સંપન્ન દેવગણો આ દેહ ધરવા ઉત્સુક છે, આતુર છે, તલસે છે 🌷 🙏 🌷

કારણકે આ જ જીવ દેહ જ એવું સાધન છે જે પરમાર્થ કરે છે - સાર્થક કરે છે - અદ્વૈત માં પરિવર્તન પામવાં પુરુષાર્થ કરે છે.

ગોવર્ધન નાં જે જે સ્વરૂપ માં જન્મો થયા તેમને સર્વે મનુષ્ય દેહને અગ્નેય પુરુષાર્થ થી એવું તપોબળ ધર્યું જે તપોફળ થી તેઓને ગોલોકધામ માં સ્થાન પામ્યું 🌷 🙏 🌷

શ્રી ગોવર્ધન ચરિત્ર આપણને શિક્ષિત કરે છે - જાગૃત કરે છે કે કાળ - સમય - યુગ તો તેનું કાર્ય કરતો જ રહેશે, આ જ કાળ - આ જ સમય - આ જ યુગ માં જ્યારે જ્યારે મનુષ્ય દેહ પામીએ ત્યારે ત્યારે ઉત્તમ પુરુષાર્થ થી જ મનુષ્ય જન્મ ને સાર્થક કરી દરેક નવો જન્મ મનુષ્ય જ જન્મ પામી આત્મીય જ્યોતિ પ્રબળ બનાવી પરમાત્મા નાં સેવક - દાસ બની મનુષ્ય દેહ ને સફળ કરવું - સાર્થક કરવું.

શ્રી વલ્લભાચાર્યજી પુષ્ટિમાર્ગ નાં માધ્યમ થી જ આપણને શિક્ષિત કરે છે કે હે મનુષ્ય જીવ! તું ક્ષણે ક્ષણે શ્રી ગોવર્ધન શરણે જા - તું શ્રી યમુના શરણે જા - તું શ્રી કૃષ્ણ શરણે જા. 🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

" गुरु " अनेकों व्याख्या - अनेकों अर्थ

संप्रदाय कहें - जो कंठी पहनाए मंत्र दीक्षा दे - गुरु 🙏

कबीर कहें - आपसे बड़ा गुरु न कोई 🌷🙏🌷

समाज कहें - मेरा तो यही गुरु जो मेरी हर अपेक्षा पूर्ण करें 🙏 - चाहे अनेकों हो 🌷🙏🌷

कुटुंब कहें - हम तो इन्हें ही मानते हैं गुरु जो हमें धर्म का ज्ञान दे और हमारा उद्धार करें 🙏🌷🙏

मित्रों कहें - कौन है गुरु? सब अपना अपना करता हैं और हमें लुटते रहते हैं - ख़ुद को मालामाल करते हैं 🌷🙏🌷

जगत कहें - कलयुग हैं - सब ऐसे ही हैं - कौन किसे थामें और कौन किसे स्वीकारें 🌷🙏🌷

गुरु - मूल गौत्र पुरुष हमारा गुरु हैं 🌷🙏🌷

केवल उन्हें ही स्वीकारें - अपनाएं और उनका ही जीवन चरित्र से हम अपना जीवन व्यापन करें 🙏

अवश्य हमारी द्रष्टि - स्थिर होगी

अवश्य हमारी बुद्धि - योग्य होगी

अवश्य हमारा संसार - शांत होगा

अवश्य हम - विवेक, विश्वास और सत्यार्थ होंगे 👍🌷🙏🌷

अवश्य हम - धर्म व्यापार और व्यवहार से दूर होंगे 👍🌷🙏🌷

अवश्य हम - सरल, निर्मल और निर्मोही होंगे 🌷🙏🌷

अवश्य हम - सैद्धांतिक मार्गदर्शन पायेंगे 🌷🙏🌷

अवश्य हमें न कोई लुटेगा और न हम मान्यता और अंधश्रद्धा में लुटाएंगे 🌷🙏🌷

अवश्य हमारा जीवन - समृद्ध, संस्कार और सफल होगा 🌷🙏🌷

अवश्य हम यात्रा, मनोरथ, सेवा पूर्ण विश्वास और समझ से करेंगे 🙏

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्रमशः

मेरे घर आज नंद पधारे यशोदा पधारे

मेरे घर आज नंद पधारे यशोदा पधारे

खननन खननन घुघरीओ बाजती

रंभा रंभा गूंज गौएं पुकारती

मन संकेत जगाता नंद कुमार आने का रे

मेरे घर आज नंद पधारे यशोदा पधारे

आंगन आंगन रंगोली बिखराई

माखन मिश्री की मटकी बंधाई

नैना संकेत जगाता नंद कुमार आने का रे

मेरे घर आज नंद पधारे यशोदा पधारे

गोप गोपियां रास रचाई

गोवर्धन यमुना निकुंज रचाई

आनंद संकेत जगाता नंद कुमार आने का रे

मेरे घर आज नंद पधारे यशोदा पधारे

मेरे घर आज नंद पधारे यशोदा पधारे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ब्रह्म वेला श्री कृष्ण नाम

प्रातः वेला श्री वल्लभ नाम

भोर वेला श्री श्रीनाथजी नाम

मध्य वेला श्री विठ्ठल नाम

दूपेर वेला श्री गोवर्धन नाम

संध्या वेला श्री यमुना नाम

रात वेला श्री स्वामिनीजी नाम

मध्य रात्रि वेला श्री सखा नाम

स्मरण स्मरण से मन श्री प्रभु का

ख्याल ख़्याल से अंग श्री प्रभु का

रंग रंग से स्पंदन श्री प्रभु का

तरंग तरंग से अंतरंग श्री प्रभु का

क्रिया क्रिया से पुरुषार्थ श्री प्रभु का

सेवा सेवा से सेवक श्री प्रभु का

शरण शरण से दासत्व श्री प्रभु का

पुष्टि पुष्टि से आनंद श्री प्रभु का

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सदगत "अर्थात जो अपनी गति को सद - सत्य करें वह व्यक्ति - वह श्रेष्ठ जन 🙏

यह सदगत अपनी गति हर सांस के साथ - अपना काल के साथ - अपना समय के साथ सद करता रहता हैं - अपने नैनों से

अपने कथनों से

अपने विचारों से

अपने कार्य से

अपने व्यवहार से

अपने धर्म से

अपने वर्ण से

अपने वचनों से

अपने वर्तन से

अपने भाव से

अपने ज्ञान से

अपने अक्षर से

अपने स्वर से

अपने स्वरूप से

अपने रंग से

अपने प्राण से

अपने आत्मा से

सदगत - हर घड़ी - हर क्षण - हर पल - हर चल से स्व को सद गति प्रदान करता हैं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हैं कुछ तुममें ऐसा जो तुम दिल में समाएं

है कुछ तुममें ऐसा जो तुम नैनों में समाएं

हैं कुछ तुममें ऐसा जो तुम अधर से चिपकाएं

हैं कुछ तुममें ऐसा जो तुम महक में बसाएं

हैं कुछ तुममें ऐसा जो तुम मन में मचलाएं

हैं कुछ तुममें ऐसा जो तुम प्रेम में तरसाएं

हे राधा! मैं सदा तुम्हारी सानिध्य में हूं

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

तेरे नैनों के सामने मैं खड़ा हूं
तुझे अपलक नज़रों से दिल में बसाता हूं

तरस तरस कर दर्शन करने द्वार तेरे पहुंचा
विरह विरह से याचना करते द्वार तेरे पहुंचा
टहेल पोकारी आज्ञा धरते जय जय गूंजाई
नाथ! द्वार पर खड़ा रहा हे तिहारी

आनंद उमंग से रास रचाते लीला अंगिनत संवारीं
मटकी फोड़ माखन चोरी खेल घर चल जगाई
तु नन्हा-सा बालक आनंद परमानंद लुटाईं
नाथ! जनम जनम तेरी रुसवाई

तेरे नैनों के सामने मैं खड़ा हूं
तुझे अपलक नज़रों से दिल में बसाता हूं 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🙏🌷🙏

मैं यह जगत का प्राणी

मैं नित नित सतयुग का स्मरण करुं

मैं घड़ी घड़ी त्रेतायुग का दर्शन करुं

मैं क्षण क्षण द्वापरयुग का ध्यान धरूं

मैं पल पल कलयुग का रंग स्वीकारूं

तो मैं कैसे स्व को पहचानें?

हर एक सुनें - मैंने स्व को खोया

हर एक देखें - मैंने स्वयं को भूला

हर एक चलें - मैंने मुझको डूबोया

आज करते करते - मैंने अपने आत्मा को भटकाया

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमने कहीं बार " श्री यमुनाष्टक " से श्री यमुनाजी के चरित्र को समझते हैं 🙏

श्री हरिराय जी कृत " श्री यमुनाजी के ४१ पद " से समझते हैं और उनकी ऊर्जा - स्पंदन और सानिध्य पाते हैं। 🙏

श्री वल्लभाचार्य जी ने पहली बार श्री यमुनाजी का स्मरण किया और क्यूं किया?

यह जिज्ञासा प्रश्न मन में जागा हैं 🙏

विनंती हैं 🙏

कोई आत्मीय पुष्टि वैष्णव से तरंग और उमंग और आनंद छा जाय 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अष्टसखाएं - ८४ वैष्णवों का चरित्र समझते समझते एक रहस्य पाया हैं।

यह जिज्ञासा रहस्य का प्रश्न यह हैं कि

यह अष्टसखाएं और यह ८४ वैष्णवों को श्री वल्लभाचार्य जी ने अपनी परिक्रमा करते करते उन्हें पहचान कर अपने शिष्यों बनायें थे या वह सब श्री वल्लभाचार्य जी के पास पहुंचे थे?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह जिज्ञासा प्रश्न शायद जो पुष्टि जीव हैं उन्हें पुष्टि सैद्धांतिक उत्तर का स्पर्श और अनुभव किया होगा 🌷🙏🌷

" तु छुपी हैं कहां मैं तड़पता यहां "

बिन तेरे सूना हैं मेरा दिल का जहां "

अरे कान्हा! तु गा रहा हैं? हम तो तुम्हें कबसे ढूंढ रहे हैं कहीं गलियों में, कुंज में, खेत खलिहानों में, भवन उपवनों में, तन मन और जीवन में, रज रज कण कण ज़र्रा ज़र्रा में कहीं जन्मों से!

एक सखी ने आश्चर्य से कहा🙏

तुरंत दूसरी सखी बोली - कान्हा! कमाल हैं! तु ऐसे गा रहा हैं! तु ऐसे तड़प रहा हैं! तु ऐसे भटक रहा हैं!

हे सखी! कान्हा ने पुचकारते कहा - हां! मैं तुम्हें खोजता हूं, ढूंढता हूं, तरसता हूं - भटकता हूं। जन्मों जन्म से, युग युग से, तन मन और जीवन से।

क्यूंकि की तुम्हीं मेरा प्रेमास्पद हो - तुम्हीं मेरा मधुर प्रेम हो। तुम्हीं तो मेरी राधा हो, तुम्हीं मेरी यमुना हो, तुम्हीं मेरी प्रेम उर्जा हो।

जब भी तुम सुख भोगते हैं - मुझे सुकून मिलता हैं 🙏

चाहे मुझे भूल जाओ - मैं तब भी तुम्हारे सानिध्य में अभिमान और अहंकार की रज रज में छुपा हुआ, तुम्हारे हर दोषों को नाश करता करता विशुद्ध करके वापस नया जीवन शुद्ध करता हूं। यह पवित्रता के लिए ही मैं तड़पता हूं - तरसता हूं - भटकता हूं 🙏

और गाता रहता हूं -

तु छुपी हैं कहां मैं तड़पता यहां

बिन तेरे सूना हैं मेरे दिल का जहां

जमुना! तु ही हैं मेरी सांवरी! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

खोयी खोयी आँख है

झुकी झुकी पलक है

जहां जहां देखेगा तु

वही वही झलक है कान्हा!

मेरा नैन है बैचैन मेरा मन है बैचैन

मेरा तन है बैचैन मेरी धड़कन है बैचैन

जहां जहां तु जाये

वही मेरा दिल जाये

कैसा है प्रेम तेरा

कैसा है विरह तेरा

मेरा स्वर बैचैन मेरा अक्षर बैचैन

मेरा रुह बैचैन मेरी नज़र बैचैन

जहां जहां तु प्रसरे

वहां वहां मेरी प्रीत तरसे

कैसा है पंथ तेरा

कैसा है तु कंथ मेरा

कान्हा! तु ही मेरा मीत

कान्हा! तु ही मेरा गीत

कान्हा! तु ही मेरा रीत

कान्हा! तु ही मेरा चित्त

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं राधा की मैं कान्हा की
मैं राधा वल्लभ बिहारी की

मैं राधा की मैं कान्हा की
मैं राधा रमण बिहारी की

मैं राधा की मैं कान्हा की
मैं व्रजराज किशोरी की

मैं राधा की मैं कान्हा की
मैं बरसाना की लाली की

मैं राधा की मैं कान्हा की
मैं नित्य नवनीत की

मैं राधा की मैं कान्हा की
मैं बांके बिहारी की

मैं राधा की मैं कान्हा की
मैं वृषभानु नंदिनी की

मैं राधा की मैं कान्हा की
मैं गोवर्धन लीला की

मैं राधा की मैं कान्हा की
मैं कुंभ निभुंक की

राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे
🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"श्री वल्लभाचार्य विरचितं मधुराष्टकं "
बार बार स्मरण और दर्शन करते करते जो अनुभूति हुई हैं। यह अनुभूति में जो जो भी आंतरिक, बाह्य और मानसिक गति हुई हैं। जिसके लिए मैं श्री वल्लभाचार्य जी को दंडवत प्रणाम करता हूं 🙏
आपकी रचनामें मैंने जो निहाला, जो पाया हैं, वही स्पर्श मैं आपकी सेवामें प्रस्तुत करता हूं 🌷🙏🌷
शायद आपको भी श्री वल्लभाचार्य जी कि कृपा हो और श्री श्रीनाथजी का दर्शन हो जाएं 🌷🙏🌷

चरणं मधुरं शरणं मधुरं
पादौ मधुरं स्मरणं मधुरं
अर्पण मधुरं समर्पण मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

नमन मधुरं वंदन मधुरं
प्रणाम मधुरं करणं मधुरम्
दंडवत मधुरं वरणं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

माल्या मधुरं तुलसी मधुरं
वन माला मधुरं फूलन मधुरं
कमलं मधुरं वैजयंती मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

अंगरखूं मधुरं उपरणु मधुरं
कमरबंद मधुरं कंठीमेला मधुरं
अंतरपट मधुरं बदनपट मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

गल माला मधुरं चिबुक मधुरं
नथनी मधुरं कुंडल मधुरं
काजल मधुरं तिलक मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

पाघ मधुरं मुकुट मधुरं
कलगी मधुरं मयूरपंख मधुरं
वेणु मधुरं बंसी मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

मुखकमल मधुरं हसितं मधुरं
वदनं मधुरं नयनं मधुरं
नासिका मधुरं अधरं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

ह्रदय मधुरं मनसंग मधुरं
स्पंदन मधुरं दर्शन मधुरं
अंगरंग मधुरं रमणं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

गमनं मधुरं वचनं मधुरं
चरितं मधुरं वसनं मधुरं
वलितं मधुरं चलितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

भ्रमितं मधुरं श्रमितं मधुरं
वदितं मधुरं सुनितं मधुरं
रचितं मधुरं फलित मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

रेणुर्मधुर रजौर्मधुर
वेदौ मधुरं शुद्धौ मधुरं
यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

सख्यं मधुरं व्यख्यं मधुरं
रख्यं मधुरं रंग्यं मधुरं
सम्यक मधुरं वैज्ञिक मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷
क्रमशः

" मातृ दिन "

पाश्चात्य देशों में कल यह दिन विशेष रूप से मनाया 🙏

" हम तो सदा माता-पिता के साथ ही रहते हैं - हम तो सदा उन्हें पूजते और सम्मानित ही करते हैं और यही हमारी हिन्दु संस्कृति हैं 🙏

हम अपने आपको टटोलें!

केवल विनंती है 🌷🙏🌷

हम लोग पाश्चात्य देशों में जाते हैं - समझते हैं - पढ़ते हैं और अपना जीवन आनंद उजास में परिवर्तित करते जीवन व्यतीत करते हैं। 🙏

यह हमारी खेवना - इच्छा और आशा की प्यास हैं 🙏

धैर्य और गर्व से कहो कि यह हमारी सबसे उज्जवल अपेक्षा हैं। कौन नहीं चाहता परदेश जा कर अपना जीवन अमूल्य करें! - हर कोई - हर कुटुंब 🙏

जो रिश्तेदार, कौटुंबिक और अपने वहां रहते हैं उनकी राह और बातें हम गौरव से कहते रहते हैं और उन्हें सम्मान देते ही रहते हैं 🙏

निखालस से कहे तो हम स्वीकारते हैं और विघ्नसंतोषी हो कर धुत्कारते हैं यह अपनी निम्न मानसिकता हैं।

हमारी हिन्दु संस्कृति के संस्कार को स्वीकार कर हमें तो गर्व से और शिक्षा - शिस्त से ऐसा झंडा लहराना चाहिए कि हमने हमारे संस्कार का पंचम लहराया IN परदेश में और अपने देश में 🙏

" मातृ दिन " संयुक्त राष्ट्र संघ के शिस्त और नीति नियमों की एक पद्धति हैं जो पूरी दुनिया को यह दिन को अपने माता-पिता के लिए सन्मानित करना हैं। यह कोई ऐसा शिष्टाचार नहीं हैं कि केवल यही दिन माता-पिता के लिए बाक़ी छोड़ दो और भूल जाओ 🌷🙏🌷

मैं कोई ऐसे नियमोंकी पैरवी नहीं करता हूं केवल शिस्तका और पद्धतिकी योग्यता बता रहा हूं 🙏

" मातृ दिन " हम तो सदा साथ रहते हैं - सदा सन्मानित करते हैं और निभाते हैं 🙏

यह हमारा मूल संस्कार हैं 🙏हम जहां भी हैं वहां से और यहां से हम हर घड़ी उनका ऋणी हैं और न कभी भूलते हैं और न कभी छोड़ते हैं 🙏

यही ही हमारा धर्म हैं - परंपरा हैं - विद्या हैं - शिक्षा हैं और पूजा हैं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" आदिकाल: सर्वकाल: कालात्मा मायया वृत:

भक्तोद्वारप्रयत्नामा जगत्कर्ता जगन्मय:"

" भक्तिप्रवर्तकस्त्राता व्यासचिन्ताविनाशक: सर्वसिद्धान्तवागात्मा भक्तिकार्यकनिरतो।

भक्तस्मयप्रणेता च भक्तवाक्परिपालक:।"

भक्तोध्दरणयत्नस्तु मन्त्रोऽत्र परमो मत:।"

हे वल्लभ! आपने "श्री कृष्ण" को पहचान कर जो " श्री कृष्ण: शरणं मम "

मंत्र पुष्टिमार्गमें सीमा चिन्ह उद्घोषित करके ब्रहमांडके हर तत्वोंको तनुनवत्व प्रदान किया हैं।

धन्य हैं हम जो आपके यह मंत्रसे हमारा आत्मीय तत्वको परम उत्तम भक्तिप्रजवल्लायक ज्योति मिले 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

लहर लहर वायु लहरें
चहक चहक पंखी गाएं
नील नील आसमां उजले
करे संकेत आनंद भोर

थिरक थिरक धरती नाचें
सररर सररर वनस्पति बाजे
थररर थररर झरना थपेड़े
जगाये मंद मंद भोर

कहूं कहूं कोयलिया गूंजे
मधुर मधुर मुरलिया सूरे
डगर डगर फूलन महकें
नैनन मन में खिले भोर

श्याम श्याम बदली घुमटे
रंग रंग लालिमा चमके
रुमझुम रुमझुम पैजनिया ठुमके
करे संकेत आनंद घनश्याम के

नैना निरख उठे कृष्ण कृष्ण
मन पुकार उठा श्याम श्याम
तन गा उठा गोपाल गोपाल
करे जीवन सदा मोहन मोहन🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हमारो नैन कृष्ण श्री कृष्ण
हमारो मन कृष्ण श्री कृष्ण
हमारो तन कृष्ण श्री कृष्ण
हमारो धन कृष्ण श्री कृष्ण
हमारो जीवन कृष्ण श्री कृष्ण🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

भोर भयो! भोर भयो! भोर भयो!🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "

आंखें बंद करें तो तु नजर आए

आंखें मूंदे तो तु लहराती आए

आंखें खोलें तो तु सामने पाएं

आंखें तिरछे तो तु अपने को तिरछाए

आंखें जुड़े तो तु मुझमें समाये

आंखें ठहरें तो तु रुक जाएं

आंखें झुकाए तो तु झुक जाएं

आंखें तरसाये तो तु छूप जाएं

आंखें बरसे तो याद तेरी सताएं

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

तु राधा हैं- तु मीरा हैं

तु ही साधना - तु ही आराधना है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" गोपी "

आजतक जो जो भी सुनते आएं

आजतक जो जो भी पढ़ते आएं

आजतक जो जो भी जानते आएं

आजतक जो भी समझते आएं

मेरी एक जिज्ञासा हैं 🌷🙏🌷

अपने आपको जो भी अनुभूति हुई हैं वह अनुभूतिका यज्ञसे हमें " गोपी " की लीलाको पहचानना हैं

मैं विनंती करता हूं 🌷🙏🌷

आप अवश्य अपनी अनुभूति कहें - बताएं 🌷🙏🌷

यही एक सत्संग पद्धति हैं जिससे हमारी अनुभूति से हर व्यक्ति " गोपी भाव - गोपी ज्ञान और गोपी विज्ञान " को सैद्धांतिक रूप से समझ पाये 🌷🙏🌷

आप अपने ग्रुप में, मेरा नंबर - 9327297507 पर चर्चा कर सकते हो और लिख सकते हो 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे मित्रों! 🌷🙏🌷 " जय श्री कृष्ण "
" गोपी भाव " मुझे अवश्य पता ही हैं कि जो जो प्रतिभाव मेरी जिज्ञासा का मिलने वाला हैं उनमें कहीं विभिन्न प्रकार के विचारों, अर्थ, अनुभव, समझ और लोकवत्त लीला ही मूल मार्गदर्शन - मार्गसूचक - मार्गप्रक्ट होगी और हैं। 🙏
" गोपी "
हर एक को होना हैं 👍
" गोपी "
हर एक को समझना हैं 👍
" गोपी "
हर एक को डूबना हैं 👍
" गोपी "
हर एक को खोना हैं 👍
" गोपी "
हर एक को पाना हैं 👍
" गोपी "
हर एक को लुटना हैं 👍
" गोपी "
हर एक को लुटाना हैं 👍
" गोपी "
हर एक को एक होना हैं 👍
यह सत्य हैं हमारे मनुष्य होने का
यह सत्य हैं हमें अपने आपको पहचानने का
यह सत्य हैं हमारी संस्कृति का
यह सत्य हैं हमारे संस्कार का
यह सत्य हैं हमारे धर्म का
यह सत्य हैं हमारे जीवन का
यह सत्य हैं हमारे मन का
यह सत्य हैं हमारे तन का
यह सत्य हैं हमारे धन का
यह सत्य हैं हमारे आत्मा का
यह सत्य हैं हमारे प्रेम का
यही तो मनुष्य की योग्यता - श्रेष्ठता और उत्तमता हैं 🌷🙏🌷
तभी तो " श्री कृष्ण " को हमने माना हैं
तभी तो " श्री कृष्ण " को हमने थामा हैं
तभी तो " श्री कृष्ण " को हमने स्वीकारा हैं
तभी तो " श्री कृष्ण " को हमने बार बार, क्षण क्षण, पल पल और घड़ी घड़ी स्मरण में अपनाया हैं 🌷🙏🌷
क्रमशः
आपको विदित कर दे - आप अवश्य अपने आपका " गोपी " अनुभूति का सत्संग अवश्य अपने ग्रुप में कर ही सकते हो और मेरा यह नंबर 9327297507 पर चर्चा कर सकते हो 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जितने मन इतने भगवान
हे प्रभु! कैसे हो हमारा मिलन

मन कहे एक ही मान
साथी मन कहे नहीं हमारा ही भगवान
हर मांग के एक एक भगवान
एक एक वर से हो धनवान

यह काम किया मेरे भगवान ने
वह काम किया वह भगवान ने
इनसे पूछो सच हैं न मेरे भगवान
उनसे पूछो सच हैं न मेरा भगवान

जहां मत्था टेका वोही भगवान
जहां फूल चढ़ाएं वहीं भगवान
मैं तो इन्हें मानु मेरा भगवान
तु तो इन्हें माने तेरा भगवान

मेरा राम तो तेरा श्याम
मेरा अल्लाह तो तेरा ईसाई
मेरा मान देव तेरा इष्ट देव
देव देव में है हर भगवान

जितना काम इतना भगवान
जितना जीवन इतना भगवान
जो जो मिले उनके कोई भगवान
कौन कहे हम भगवान के संतान

जीत देखुं तीत भगवान भगवान
जीत मिलु वह भगवान भगवान
जीत सुनूं वोही भगवान भगवान
जीत कहूं वोभी भगवान भगवान

पत्थर पूज्या हर भगवान
वनस्पति चढ़ाई हर भगवान
जल स्नान कराएं हर भगवान
भोग धराया हर भगवान

नमन किया हर भगवान
दंडवत किया हर भगवान
वंदन किया हर भगवान
प्रणाम किया हर भगवान

एक आश्रय बाकी हर अन्याश्रय
एक विश्वास बाकी हर अंधविश्वास
एक श्रद्धा बाकी हर अंधश्रद्धा
एक ज्ञान बाकी हर अज्ञान
हे मन!हे जीव!हे आत्मा!अपने आप समझले 🙏तु ही तेरा भगवान 🙏" Vibrant Pushti "" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न याद करुं तुझे फरियाद करुं

तु दूर रहें तु मुझसे दूर हो

तेरा योग में सदा रहता हूं

चाहे वह वियोग हो

पर

तेरे योग में रहता हूं

तु उसे प्रेम समझे

तु उसे विरह समझे

पर

तेरी याद में नहीं कभी रहता हूं

ते फरियाद में नहीं कभी फरियादता हूं

तु उसे भाव समझे तु उसे ज्ञान समझे

तेरी भक्ति में तुझे ढूंढता रहता हूं

कोई जो समझें

कोई माखन लिपटाए

कोई मिसरी खिलाएं

कोई भोग धराएं

कोई योग जगाएं

हे कान्हा! तु सोचले

तु क्या कया हैं?

🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं मीरा - नहीं कोई जोगन

मैं मीरा - नहीं कोई जोबन

मैं मीरा - नहीं कोई दोहन

मैं मीरा - नहीं कोई पूज़ारन

मैं मीरा - हूं तेरी विरहण 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज प्रचंड

धरती प्रचंड

प्रचंड सारा जहां

तरुवर तरसे

वनस्पति तरसे

तरसे सारा जहां

जीव तरसे

पशु तरसे

करे प्रार्थना मनसे

बरसे बादल

बरसे सृजल

यांचे जीवन हर्षे

हे परमात्मा!

हे अंतर आत्मा!

ऐसी तान छेड़ मधुर

जो सूरज शीतले

जो धरती शीतले

शीतले सारा जहां

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" मीरा " एक स्वर की गूंज जैसे सुनी नैना थिरकने लगे, मन एक चित्त होने लगा, तन में स्थिरता व्यापने लगी।

यह कैसा शब्द! यह कैसा स्वर!

कोई मंत्र हैं या तंत्र हैं! कोई नाम हैं या धाम हैं! कोई उर्जा हैं या तेज हैं! कोई लहर हैं या कोई महक हैं! कोई जीव हैं या कोई शिव हैं! कोई प्रेम पुकार हैं या कोई विरह वेदना हैं! कोई रंग हैं या कोई तरंग हैं।

स्वर छूते ही ऐसा स्पर्श - ऐसा स्पंदन जो आत्मा को मधुर कर दिया।

आसपास देखने लगा, कहां से उठें यह स्वर? न आकाश से उठा था, न धरती से उगा था, न हवा से जागा था, न जल से उडा था।

ओहहह! किसने यह तरंगें छेड़ी?

दूर दूर तक टटोला, न पता चला।

तो यह गूंज कैसे?

सोचता ही रहा

इतने में फिर गूंज उठी - मीरा!

अरे! यह तो मुझसे ही उठ रही हैं। " मीरा "

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

एक फूल पौधे पर खिला था, उनकी नजर चारों ओर घूमती हैं। दूर दूर तक कोई नहीं है तो वह सोचने लगा कि क्या मैं ही फूल पूरे जगत में खिला हैं और सारे जगत को रंगीन और महकाता हैं। वह झुमने लगा, झुमते झुमते उन्होंने अपने आपको इतना बिखराया की सारा जगत आनंद से झुम उठा।

फूल भी मुस्कुराता, गीत गुनगुनाता, झुमता, लहराता अपने रंग में मस्त रहता था।

ऐसे कहीं दिन पसार हो गये, एक दिन उन्हें ख्याल आया - मैं अकेला अपनी मस्ती में रहता हूं - मैं कितना उत्तम हूं!

ऐसे दिन गुजरते गुजरते वह धीरे-धीरे थकने लगा और सोचने लगा मेरे साथ कहीं और फूलों होते तो अनेरा आनंद होता।

वह श्री प्रभु से प्रार्थना करने लगा, हे प्रभु! मेरी साथ अनेकों फूलों को भी उगाओ और पूरा जगत हमारी महक और रंगों से भरदो 🙏

त्वरित प्रार्थना स्वीकार हुई और उनके आसपास अनेकों फूलों खिल गये, पूरा जगत महक और रंगों से झुम उठा।

एक दिन एक माली आया और वही फूल को चूंट कर ले गया, आज मुझे यह फूल के अच्छे दाम मिलेंगे और मैं अपना निर्वाह आनंद से गुजारुंगा।

वह माली जहां जहां वह फूल बेचने गया वहां वहां सबने वह फूल देख कर खुश हुएं पर कोई खरीद न सका। आखिर माली ने वह फूल अपने श्री प्रभु के चरणों में समर्पित करना चाहा और वही उन्होंने किया 🙏

इधर सारे फूलों सोचने लगे अरे यह कैसा? हम अपने आप खिलते हैं और कोई उन्हें तोड कर अपनी मनमानी करते हैं। उन्हें इतना भी ख्याल नहीं हैं कि हम कैसे और क्यूं उगे हैं?

मेरे मित्रों! बस हम भी यही जगत के ऐसे ही फूल हैं और हमें क्या होना हैं?

हमारा प्राथमिक कार्य जगत को सुंदर, मधुर और रंग-बिरंगी करना हैं, यही विशुद्ध और निस्वार्थ कार्य निभाना हैं और आखिर श्री प्रभु को समर्पित होना हैं। 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बार बार देखा

कृष्ण मेरी पास आते हैं 🙏

मैं जितनी भी बार उनके पास जाना चाहा मैं नहीं पहुंच सका

क्यूं?

हमने ख्याल किया तो हमारे अंतर में आया

हमने स्मरण किया तो हमारे मन में आया

हमने विनंती किया तो हमारे स्पंदन में आया

हमने प्रार्थना किया तो हमारी उर्जा में आया

हमने याचना किया तो हमारे सामने कोई रुप में आया

हमने वंदन किया तो हमारे दर्शन में आया

हमने दंडवत किया तो हमारे रज रज में आया

हमने गुहार लगाई तो हमारे मदद में आया

हमने मनोरथ किया तो हमारे अनुभव में आया

हमने कल्पना किया तो हमारे अंतरंग में आया

हमने यज्ञ किया तो हमारे अग्नि में आया

हमने पुरुषार्थ किया तो हमारे हाथ थामने आया

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसे कहूं प्रीत हैं तुमसे
कैसे करुं प्रीत श्याम तुमसे

न जानु कोई प्रेम की थाणी
पहचानु कैसे प्रेम की वाणी
एक एक पलक श्याम श्याम गूंजे
कैसे झुकें पलक बिन झांकी तेरी

सांस धड़कन गायें गीत विहरणी
तन मन छेड़े सूर जुहारणी
घड़ी छूटे कब पल तूटे न जाणी
कब हो मिलन एक ही लगनी

कैसे कहूं प्रीत हैं तुमसे
कैसे करुं प्रीत श्याम तुमसे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वृंद वृंद से जागा वृंदावन
बूंद बूंद से सिंचा वृंदावन
रज रज से रचा वृंदावन
पत्ते पत्ते से पढ़ा वृंदावन
रंग रंग से रंगा वृंदावन
राग राग से गाया वृंदावन
भाव भाव से भाया वृंदावन
अक्षर अक्षर से लिखा वृंदावन
स्वर स्वर से सुना वृंदावन
कण कण से कहा वृंदावन
लहर लहर से ल्हासा वृंदावन
थिरक थिरक से थडका वृंदावन
ज़र्रा ज़र्रा से ज़ुहारा वृंदावन
किरण किरण से प्रज्वला वृंदावन
धडक धडक से धड़का वृंदावन
सूर सूर से सूरा वृंदावन
रस रस से रासा वृंदावन
हंस हंस से हरखा वृंदावन
थनक थनक से नाचें वृंदावन
गीत गीत से गूंजें वृंदावन
धून धून से रणके वृंदावन
फूल फूल से महका वृंदावन
शृंग शृंग से शृंगारे वृंदावन
उर्म उर्म से उर्मि वृंदावन
उत्स उत्स से उत्सव वृंदावन
हम हम से हमारो वृंदावन
प्रेम प्रेम से पूजा वृंदावन
आनंद आनंद से परमानंद वृंदावन
गोपी गोपी से गोपाल वृंदावन
राधा राधा से राधे वृंदावन
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

" सखी " अधर से पुकारा यह शब्द
कितनी असर के साथ गूंजता हैं।
मन को छूआ, धड़कन को छूआ, दिल को छूआ और आत्म को छूते हुए नैनों की नजर की चित्रणों से निकलता हैं।
" सखी "
एकांत में बैठे - सखी
अकेले बैठे - सखी
एकाग्र से बैठे - सखी
मन स्थिर - सखी
नैना मूंदे - सखी
अधर थरथरे - सखी
तन तरसे - सखी
धन बरसे - सखी
जीवन जुड़े - सखी
गीत गुनगुनाना - सखी
सरगम छेड़ना - सखी
राग आलापना - सखी
साथ निभाना - सखी
प्रेम जागे - सखी
विरह वेदना - सखी
आत्म एकात्म - सखी
रंग खेलना - सखी
अंग अठखेलियां - सखी
मन मुरलिया - सखी
रास रमण - सखी
रस भिगोना - सखी
उमंग उडाना - सखी
आनंद लुटाना - सखी
केवल डूबना - सखी
केवल समर्पण - सखी
सखी मेरी सखी 🌷🙏🌷
तुम बिन और न कोई
तुम बिन और न कहीं
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसे आऊं मित के द्वार

मन से लिपटे मोह माया संसार

नैन से बांधें राह कहें ठहर

शब्दों से टोकें रात भई डगर

कौन कैसे क्यूं करें पुकार

सुबह मिल आना हो मन हार

बैठो अब कुटुंब के किनार

नैनन करें प्रिय प्रिये गुहार

मनन उलझन सुलझे नहीं अपार

सांसन मंद मंद करें धृत्कार

प्रेम करें तड़प तड़प इंतजार

हे श्यामा!

तुं कहें तो छूप से आऊं तेरे दर

तुं कहें तो लड के पहुंचे तेरे तीर

तुं कहें तो छोड़ के सजाएं तेरी बहार

तुं कहें तो मर के सिधाऊं तेरा एकरार

हे प्यार! नहीं अपलकता नैन झांकने

हे यार! नहीं ठहरता मन झुरने

हे दिलबर! नहीं विचलता दिल

हे दीदार! नहीं हैं कोई आधार

श्यामा! तुं चाहे वहीं मेरा एकरार 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" ब्रह्मरुपं जगद् ज्ञेयं तथ्य अस्माद् व्यतिरिच्यते ।

तल्लीलात्वेऽपि सृष्टेस्तु भक्ति: सृष्टौ विलक्षणा।।

निरुपध्यात्मरत्यास्तु वैशिष्ट्याद् इतरासु च ।

अतो ह्यर्थार्थिभक्तेस्तु नैवात्मरतिरुपता।। "

हे श्री वल्लभाचार्य! आपको हृदयस्थ नमन 🙏

आपका प्राकट्य, आपका चरित्र, आपके जीवन सिद्धांत, आपकी जीवन शैली, आपकी शिक्षा, आपके विचार, आपके संकल्प, आपकी कार्य पद्धति, आपका पुरुषार्थ अदभुत, अलौकिक और परलोकिक हैं। 🙏

आपने हम जैसे जीव के लिए जो चरितार्थ किया हैं! सच में हमें जो पुष्टिमार्ग दिशा निर्देशक सूचक किया हैं। आप हमारे सत्य मार्गदर्शक हैं। आपने हमारा इतना ध्यान, ज्ञान, विज्ञान और प्रज्ञान निर्देष्ट किया हैं कि हम अवश्य श्री कृष्ण से एकात्म हो - एकाकार हो।🙏

सामान्यत से सामान्यत जीव जीवन को पुरुषोत्तमता प्राप्त हो - आविर्भाव हो - पार्दुभाव हो।

एक " श्री कृष्ण: शरणं मम " और " जय श्री कृष्ण " से आपने हमें आपका सर्वस्व प्रदान किया हैं।🙏

धन्य हैं हम कि आपके रचित और चारित्रिक स्पर्श से हम कुछ समझने कि कोशिश करते हैं।

आपको दंडवत प्रणाम 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

" राधा "

कृष्ण चरित्र
कृष्ण लीला
कृष्ण कथा
कृष्ण सत्संग
कृष्ण कीर्तन
कृष्ण भजन
कृष्ण यात्रा
कृष्ण वार्ता
कृष्ण ज्ञान
कृष्ण ध्यान
कृष्ण रास
कृष्ण साधना
कृष्ण पूजा
कृष्ण उत्सव
कृष्ण मनोरथ
कृष्ण संकल्प
कृष्ण विज्ञान
कृष्ण प्रज्ञान
कृष्ण गाथा
कृष्ण गीत
कृष्ण धून
कृष्ण रास
कृष्ण संस्कृति
कृष्ण संगीत
कृष्ण नाम
कृष्ण गान
कृष्ण वान
कृष्ण धाम
जहां कृष्ण वहां राधा
जहां राधा वहां कृष्ण
ओहहह तो गोकुल में कृष्ण
तो मथुरा कौन? राधा
ओहहह तो वृंदावन में कृष्ण
तो द्वारका में कौन? राधा
जहां कृष्ण वहां राधा
जहां राधा वहां कृष्ण
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जन्म पाया तो अंधश्रद्धा का धर्म बंधन पाया

जैसे जैसे बड़ा होते गया तब पता चला धर्म अर्थात स्व अतः शिक्षा और दिक्षा स्वीकार कर धर्म धरना 🙏

हमारी संस्कृति के कोई भी ऋषि के चरित्र समझ ने कि कोशिश हजारों बार जगाई

न समझ पाया - मनुष्य हो कर भी अलग अलग मनुष्य?

कर्म से अलगता समझ सकते हैं पर धर्म तो खुद ही अपनाता हैं 🙏

चाहे कुटुंब कोई भी संप्रदाय के हो।

यही ही सत्य

यही ही सनातन

और

यही ही योग्य संस्कृति हैं 🙏

जो हर एक को स्व अतः स्वीकार कर अपनानी हैं।

यही ही " वेद " हैं 🙏

यही ही " अद्वैत " हैं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पता चला हैं

श्री यमुनाजी अपना रुप बदल रही हैं 🙏

हां! क्यूंकि हमने अपना रुप नरक जैसे बनाया तो वह भी ऐसी ही होगी।

न पान कर सके - स्नान कर सके - न दर्शन कर सके 🙏

हम उनके पुत्र-पुत्री हम ही हमारी धात्री की दुर्दशा करें तो कोई भी हो अपना रुप बदलेगा 🙏 चाहे भगवान भी अवतार धरें तो उन्हें अति विध्वंस का ही रुप धरना पड़ेगा 🙏

सोचते रहते हैं, समझते रहते हैं, अपनाते रहते हैं और निभाते रहते हैं - कलयुग हैं - कलयुग हैं 🙏

नहीं नहीं! जो हमसे ही परिवर्तन हैं और हम ही परिवर्तन कर सकते हैं कि - सतयुग लाना हैं - लाना हैं - लाना हैं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सांस लेते लेते करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

नैन खूलते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

नैन मूंदते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

नैन मिलाते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

अधर मचलते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

अधर खूलते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

अधर बंध होते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

जल पान करते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

अन्न आरोगते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

स्वर सृजते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

स्वर गाते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

स्वर गुनगुनाते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

स्वर सुनते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

मन जागते ही रटना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

मन सुलाते ही रटाना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

मन सोचते ही मनना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

मन दौड़ते ही दौड़ाना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

मन स्थिर करते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

मुख हंसते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

मुख रोते ही करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

केश संवरते करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

केश गूंथते करना हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

अभी केवल हमारे चहरा तक ही स्मरण करते हैं - श्री कृष्ण: शरणं मम

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

અદભૂત 🙏

" માં "

ઓ માં! ઓ માં!

તું છે તો હું છું

તું નથી તો હું તારો પડછાયો

તારા વિના હું એવો ઓશિયાળો

શ્વાસે શ્વાસે કેવળ તારું સ્મરણ

તન મન ધન થી સ્વીકારું તારું શરણ

જીવન સદા પામું એક જ તારું ચરણ

સેવા ચાકરી કરું તારી એક એક ક્ષણ

તું જ મારી ગુરૂ

તું જ મારી વાણી

તું જ મારા પરમાત્મા

તું જ મારાં ધર્માત્મા

વંદન 🙏 પ્રણામ 🙏 નમન 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" स्वरुपयोगिता "

" कृष्ण " कृष्ण " कृष्ण "

हे जीव!

तुझे " श्री कृष्ण का शरण पाना है " 🙏

तुझे " श्री कृष्ण का स्मरण करना है " 🙏

तुझे " श्री कृष्ण के चरण में रहना है " 🙏

तुझे " श्री कृष्ण का वरण स्वीकारना है " 🙏

तुझे " श्री कृष्ण का धरण अपनाना है " 🙏

ऐसा क्यूं?

" श्री कृष्ण शरण से ज्ञान और भक्ति विद्यमान होगी "

" श्री कृष्ण स्मरण से विश्वास और सत्य की उपाधि पाये "

" श्री कृष्ण चरण से दासत्व और निरपेक्षता उत्से "

" श्री कृष्ण वरण से निर्भयता और सेवा अर्चन होगी "

" श्री कृष्ण धरण से पुरुषार्थ और सर्वोत्तम परिवर्तन "

हे वल्लभ! आपको नमन नमन नमन 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नजर से नजर टकराई क्या कान्हा रे

मेरी मन की मति हो गई तेरी सांवरे

नजर नजर पर तु दिखाई दे कान्हा रे

मेरे नैनों में बस गया ऐसे तु सांवरे

मन मन मचल कर दौड़े चले तेरे पास रे

क्या करुं क्या न करुं तेरे लिए सांवरे

सांस सांस भी तेरा स्मरण करें कान्हा रे

धड़कन धड़कन गायें विरह तेरा बावरे

तनु अंग में आग लगी तेरे मिलन प्यास रे

प्रेम प्रीत मधुरस में खोई तेरी आश रे

तु भी तडपे मैं भी तडपु कैसी तेरी प्रीत रे

कान्हा! अब आन मिलें प्रेम स्थली वृंदावन रे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्ण चरित्र " पढ़ते पढ़ते
" कृष्ण चरित्र " समझते समझते
" कृष्ण चरित्र " स्वीकारते स्वीकारते
" कृष्ण चरित्र " पहचानते पहचानते
" कृष्ण चरित्र " अपनाते अपनाते
" कृष्ण चरित्र " चारित्र्य जीते जीते
जो जो भी आज्ञा, जो जो भी सिद्धांत
जो जो भी शिक्षा, जो जो भी संस्कार
पाये पाये
जीवन में उतारें उतारें
जीवन को घडने
मन को स्थितिप्रज्ञ करने
तन को शुद्ध करने
नैनों को पवित्र करने
धन का आविष्कार करने
समय का वैराग्य करने
जीवन का पुरुषार्थ करने
वृत्ति निरपेक्ष करने
प्रवृत्ति संस्कृत करने
मति निर्मोह करने
गति वैज्ञानिक करने
रीति नि:संदेह करने
नीति विश्वसनीय करने
सती आचरण करने
ज्ञाती समसृष्ट करने
क्षति निर्मूल करने
श्रुति शरण करने
कृति प्रमाण करने
प्रेम विरह करने
आत्मा वरण करने
भक्ति दासत्व करने
जो भी किया वह
हे कृष्ण! तुझे अर्पण, तर्पण, समर्पण
हे कृष्ण! तुझे शरणागत, न्योछावर
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक पुष्टि स्पंदन – रंग

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara

VIBRANT PUSHTI

53, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507